तीस

आत्मिक युद्ध के बारे में आधुनिक परिकल्पना, भाग 1

Modern Myths About Spiritual Warfare, Part 1

आत्मिक युद्ध का विषय तत्कालिक वर्षों में कलीसिया में विख्यात होता जा रहा है। दुर्भाग्यवश, इनमें से अधिकांश सिखाई गई चीज़ें पवित्रशास्त्र के विरुद्ध हैं। परिणामस्वरूप, संसार भर में प्रभु के सेवक उस तरह के आत्मिक युद्ध की शिक्षा दे रहे हैं जिसके बारे में बाइबल कभी नहीं कहती। निश्चय ही कुछ चीज़ें *पवित्रशास्त्रीय* आत्मिक युद्ध के समान हैं, और शिष्य निर्माता सेवक को इसकी शिक्षा देने के साथ-साथ इस पर अभ्यास भी करना चाहिए।

इस अध्याय में और अगले में, मैं शैतान और आत्मिक युद्ध के संबंध में सामान्य गलत धारणाओं को संबोधित करूंगा। यह उस समस्त पुस्तक का संक्षेपण है जिसे मैंने *आत्मिक युद्ध और शैतान के बारे में आधुनिक पौराणिकता* नामक अपनी पुस्तक में लिखा है। इस पुस्तक को अंग्रेज़ी में हमारी वेबसाइट www.shepherdserve.org पर पढ़ा जा सकता है।

पुराण कथा # 1 : भूतकाल से ही परमेश्वर और शैतान एक बड़े युद्ध में लगे हुए हैं। आज, उनमें अभी भी अंतरिक्षी संघर्ष है।''

Myth #1: "In eternity past, God and Satan engaged in a great battle. Today, the cosmic struggle still rages between them."

यह विशिष्ट कल्पना या पौराणिक कथा उस आधारिक सत्य के विरुद्ध है जिसे पवित्रशास्त्र में प्रगट किया गया है– कि वह सर्वसामर्थी या सर्वशक्तिमान है।

यीशु ने हमें बताया कि परमेश्वर के लिए सभी चीज़ें संभव हैं (देखें मत्ती 19:26)। यिर्मयाह ने इस बात की पुष्टि की कि परमेश्वर के लिए *कुछ भी* कठिन नहीं है (देखें यिर्म. 32:17)। कोई भी व्यक्ति या शक्ति परमेश्वर को अपनी योजानाओं को पूरा करने से नहीं रोक सकती (देखें 2 इति. 20:6; अय्यूब 41:10; 42:2)। यिर्मयाह के माध्यम से परमेश्वर पूछता है, ''मेरे तुल्य कौन है.. कौन ... मेरा सामना कर सकेगा?'' (यिर्म 50:44)। जवाब है कोई नहीं, शैतान भी नहीं।

यदि उपरोक्त पवित्रशास्त्र की पुष्टि के अनुसार परमेश्वर सच में सर्वशक्तिमान है तब इसका अर्थ यह हुआ कि यदि परमेश्वर और शैतान किसी युद्ध में थे या हैं तो परमेश्वर सर्वशक्तिमान नहीं है। यदि परमेश्वर एक बार भी चूक गया या कम से कम मात्रा में भी शैतान उस पर हावी हो गया हो, तो वह जैसी घोषणा अपने सर्वशक्तिमान होने के बारे में करता है, वह उतना नहीं है।

शैतान की शक्ति पर मसीह की टिप्पणी
Christ's Commentary on Satan's Power

यीशु ने एक बार शैतान के स्वर्ग से गिराए जाने के संबंध में कहा था, जो हमारी यह समझने में सहायता करेगा कि हमारे सर्वशक्तिमान परमेश्वर की तुलना में शैतान कितना सामर्थी है:

> वे सत्तर आनन्द से फिर आकर कहने लगे, ''हे प्रभु तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में है।'' उसने उनसे कहा; ''मैं शैतान को बिजली की नाईं स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था'' (लूका 10:17-18)।

जब सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने शैतान को स्वर्ग से बहिष्कृत करने की आज्ञा दी तो *शैतान उसका विरोध न कर सका।* यीशु ने *बिजली की नाईं* अलंकार उस गति पर बल देने के लिये किया है जिससे शैतान गिरा था। वह *चाशनी* के समान नहीं गिरा, बल्कि *बिजली के समान।* एक क्षण के लिए शैतान स्वर्ग में था और दूसरे क्षण-बूम! वह वहां से जा चुका था।

यदि परमेश्वर इतनी शीघ्रता व सरलता से शैतान को निकाल सकता है, तो इस बात में कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि उसके द्वारा नियुक्त सेवक इतनी ही शीघ्रता और सरलता से दुष्टत्माओं को निकाल सकते हैं। मसीह के प्रथम शिष्यों के समान, आज के अधिकांश मसीही भी शैतान की शक्ति के प्रति बड़ा आदर रखते हैं और उन्होंने अभी तक इस बात को स्वीकार नहीं किया है कि परमेश्वर की शक्ति बहुत बड़ी है। परमेश्वर सृष्टिकर्त्ता है और शैतान तो मात्र सृष्टि है। *शैतान का परमेश्वर के साथ कोई मेल नहीं है।*

वह युद्ध जो कभी नहीं हुआ था
The War That Never Was

कुछ को यह सुनना बहुत अजीब लग सकता है, तथापि हम सभी को यह समझने की ज़रूरत है कि *परमेश्वर और शैतान एक युद्ध में न तो हैं, न ही रहे हैं और न ही कभी होंगे।* जी हाँ, वे भिन्न विषय-सूची पर कार्य करते हैं, और कहा जा सकता है कि वे विरोध में हैं। लेकिन जब दो एक दूसरे के विरोध में होते हैं तथा एक दूसरे से अत्यधिक शक्तिशाली होता है, तो उनके संघर्ष को युद्ध का नाम नहीं दिया जा सकता। क्या एक केंचुआ हाथी के साथ लड़ सकता है? शैतान, जो कि एक केंचुए के समान है, उसने उसका विरोध करने का व्यर्थ प्रयास किया जो बहुत शक्तिशाली है। उसके विरोध पर उसी क्षण कार्य करते हुए उसे स्वर्ग से ''बिजली की नाईं'' निकाल दिया गया। वहां कोई युद्ध नहीं केवल निष्कासन हुआ था।

यदि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, तो शैतान के सम्मुख परमेश्वर से एक भूत के समान छिपते हुए उस कार्य को करने का एक छोटा सा अवसर भी नहीं है जिसे वह करना चाहता है, और यदि परमेश्वर शैतान को कुछ भी करने की अनुमति देता है, तो इच्छा को पूरा करना ही होगा। इस विषय पर पवित्रशास्त्र से लगातार जांच करने के द्वारा यह सत्य हम पर बहुतायत से स्पष्ट हो जाएगा।

रोचक है, शैतान पर परमेश्वर के सर्वोच्च को न केवल भूतकाल में दिखाया गया था, बल्कि यह भविष्य में भी दिखेगा। हम प्रकाशितवाक्य में पढ़ते हैं कि एक स्वर्गदूत शैतान को बांधकर हज़ार वर्ष के लिए उसे बन्दी बना लेगा (प्रका. 20:1-3)। इस भावी घटना को परमेश्वर और शैतान के बीच युद्ध नहीं माना जा सकता है। जबकि शैतान का स्वर्ग से निकाला जाना अवश्य ही युद्ध हो सकता है। इस पर ध्यान दें कि शैतान के पास उस कैद से आज़ाद होने की शक्ति नहीं है और उसे केवल परमेश्वर की योजनानुसार ही मुक्त किया जाएगा (देखें प्रका. 20:7-9)।

भविष्य में ''स्वर्ग में होनेवाला युद्ध'' क्या है?
What About the Future "War in Heaven"?

यदि यह सत्य है कि परमेश्वर और शैतान न तो किसी युद्ध में हैं और न ही रहे हैं और न ही कभी होंगे, तब प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में हमें भविष्य में स्वर्ग में होनेवाले युद्ध के बारे में क्यों बताया गया है जिसमें शैतान भी शामिल है (देखें प्रका. 12:7-9) यह एक अच्छा प्रश्न है, और कोई भी इसका जवाब आसानी से दे सकता है।

ध्यान दें कि यह युद्ध *मीकाईल और उसके स्वर्गदूतों तथा शैतान और उसके दूतों* के बीच होगा। परमेश्वर के इस युद्ध में होने के बारे में नहीं बताया गया है। यदि वह वहां होता तो इस संघर्ष को बहुत कठिनाई से ही युद्ध का नाम दिया जा सकता

था, क्योंकि परमेश्वर सर्वशक्तिमान होने के कारण, किसी भी क्षण में विरोध को आसानी से कुचल सकता है जैसा उसने पहले भी प्रमाणित किया है।

मीकाईल के अतिरिक्त अन्य स्वर्गदूत सर्वशक्तिमान नहीं हैं, और इसी कारण शैतान और उसके दूतों के साथ उनके संघर्ष को युद्ध का नाम दिया जा सकता है, क्योंकि कुछ समय के लिए उनमें वास्तव में संघर्ष होगा। अधिक शक्तिशाली होने के कारण वे शैतान और उसके गिरोह पर विजय पाएंगे।

परमेश्वर इस युद्ध को स्वर्गदूतों पर छोड़ते हुए स्वयं इस युद्ध में क्यों शामिल नहीं हुआ? मेरे पास ऐसा कोई विचार नहीं है। निश्चय ही परमेश्वर सब कुछ जानते हुए, कि उसके स्वर्गदूत युद्ध में विजयी हो सकते हैं, और इसी कारण उसने यह परिणाम निकाला कि उसका इस युद्ध में व्यक्तिगत रूप से शामिल होना ज़रूरी नहीं है।

मुझे इसमें कोई संदेह नहीं कि परमेश्वर यहोशू के दिनों में दुष्ट कनानियों को शीघ्रता व सरलता से पूरी तरह से नाश कर सकता था, लेकिन उसने इस कार्य को इस्राएलियों को सौंपने का चुनाव किया। जिस कार्य को परमेश्वर बिना किसी प्रयास के क्षण भर में कर सकता था, उसने उनसे इसे करवाना चाहा, कई माह तक बड़ा प्रयास करते हुए। शायद इससे परमेश्वर को खुशी मिलती थी क्योंकि इसके लिए इस्राएलियों को विश्वास करना ज़रूरी था। शायद इसी कारण से वह स्वर्ग में होनेवाले भावी युद्ध में शामिल नहीं होगा। बाइबल हमें इस बारे में नहीं बताती।

स्वर्ग में मीकाईल और उसके स्वर्गदूतों तथा शैतान और उसके दूतों के बीच होनेवाले युद्ध के कारण, हमें यह परिणाम नहीं निकालना है कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान नहीं और इसी तरह से कनानियों के इस्राएलियों के साथ होने वाले युद्ध में भी कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान नहीं है।

क्या शैतान को क्रूस पर यीशु द्वारा परास्त नहीं किया गया था?

Was Not Satan Defeated by Jesus on the Cross?

अन्ततः परमेश्वर और शैतान के बीच होनेवाले युद्ध की पौराणिकता के आधार पर मैं सामान्य रूप से प्रयोग किये जाने वाले इस कथन के आधार पर यह परिणाम निकालना चाहूंगा: *यीशु ने शैतान को क्रूस पर परास्त किया।* पवित्रशास्त्र कभी भी वास्तव में ऐसा नहीं कहता कि यीशु ने शैतान को क्रूस पर परास्त किया।

जब हम कहते हैं कि यीशु ने शैतान को परास्त किया, तो हम यह अर्थ लगाते हैं कि मानो यीशु और शैतान एक युद्ध में थे, जिसका अर्थ हुआ कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान नहीं है और यह कि शैतान पहले से ही परमेश्वर के नियंत्रण में नहीं था। इस बात का वर्णन करने के कई बाइबल के अनुसार तरीके हैं कि यीशु के द्वारा

कलवरी पर अपनी जान देने पर शैतान का क्या हुआ। उदाहरण के लिये, पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि अपनी मृत्यु के द्वारा यीशु ने ''उसे शक्तिहीन किया जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी'' (देखें इब्रा. 2:14-15)।

किस मात्रा तक यीशु ने शैतान को शक्तिहीन किया? निस्संदेह शैतान अब भी शक्तिहीन नहीं है, नहीं तो प्रेरित यूहन्ना ने कभी भी इस तरह से नहीं लिखा होता, ''सारा संसार उस दुष्ट के *वश* में पड़ा है'' (देखें यूहन्ना 5:19, पर बल दिया गया है)। इब्रानियों 2:14-15 के अनुसार शैतान को ''*मृत्यु की शक्ति*'' के संबंध में शक्तिहीन किया गया। इसका क्या अर्थ है?

पवित्रशास्त्र में तीन तरह की मृत्यु का उल्लेख है: आत्मिक मृत्यु, शारीरिक मृत्यु और दूसरी मृत्यु।

जैसा हमने पिछले अध्याय में सीखा, दूसरी मृत्यु (या अनन्त मृत्यु) का उल्लेख प्रकाशितवाक्य 2:22; 20:6,14; 21:8 में मिलता है; और इस समय में अविश्वासियों को आग की झील में डाला जाएगा।

एक व्यक्ति के शरीर से आत्मा के अलग हो जाने पर *शारीरिक मृत्यु* होती है।

आत्मिक मृत्यु मानव आत्मा की उस अवस्था के बारे में बताती है जिसका अभी तक पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म नहीं हुआ है। आत्मिक रूप से मृत व्यक्ति में एक ऐसी आत्मा होती है जो परमेश्वर से दूर होती है, एक ऐसी आत्मा जिसमें पापी स्वभाव होता है, एक ऐसी आत्मा जो कुछ मात्रा में शैतान से जुड़ी होती है। इफिसियों 2:1-3 एक आत्मिक रूप से मृत व्यक्ति के चित्र को चित्रित करता है:

> और उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे। जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है। इन में हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर और मन की कल्पनाएं पूरी करते थे, और और लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।

पौलुस ने लिखा कि इफीसी मसीही अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे। निस्संदेह वह शारीरिक मृत्यु के बारे में नहीं कह रहा था, क्योंकि वह शारीरिक रूप से जीवित लोगों को लिख रहा था। इसलिए, वह इस तरह से कह रहा है कि वे *आत्मिक रूप से कहे जाने में, मृतक* थे।

उन्हें आत्मिक रूप से किसने मारा था? ''उनके अपराधों और पापों ने।'' परमेश्वर ने आदम से जो कहा था उसे स्मरण करें कि जिस क्षण वह आज्ञा उल्लंघन करेगा, उसी क्षण वह मर जाएगा (देखें उत्प. 2:17)। परमेश्वर शारीरिक मृत्यु नहीं बल्कि

आत्मिक मृत्यु के बारे में बोल रहा था, क्योंकि वर्जित फल खाने वाले दिन आदम की शारीरिक रूप से मृत्यु नहीं हुई थी। इसके विपरीत, वह उस दिन आत्मिक रूप से मर गया था, और बाद में सैकड़ों वर्षों तक वह शारीरिक रूप से नहीं मरा था।

पौलुस इफिसियों से कहते हुए जारी रहता है कि आत्मिक रूप से मृत लोग संसार की रीति के अनुसार अपने अपराधों और पापों में चलते (अर्थात् जो दूसरे कर रहे हैं उसे करना) और 'आकाश के अधिकार के हाकिम' का अनुसरण कर रहे हैं।

''आकाश के अधिकार का हाकिम'' कौन है? वह शैतान है, जो अपने अंधकारमय क्षेत्र के वातावरण में पाई जानेवाली अन्य दुष्टात्माओं पर अधिकारी के रूप में शासन करता है। इन बुरी अथवा दुष्ट आत्माओं को इफिसियों के बाद के अध्याय में विभिन्न वर्गों में सूचीगत किया गया है (देखें इफि. 6:12)।

पौलुस ने कहा कि ''अंधकार का हाकिम ''वह आत्मा है जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य कर रही है।'' ''अनाज्ञाकारिता के पुत्र'' अन्य गैर विश्वासियों के लिए कहा गया है, जो कि स्वभाव से ही पापी हैं। पौलुस ने बाद में कहा कि वे ''*स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे*'' (इफि. 2:3, पर बल दिया गया है)। इसके अतिरिक्त, उसने कहा कि शैतान *उनमें* कार्य कर रहा था।

शैतान पिता के रूप में
The Devil for a Dad

उद्धार न पाए लोग चाहे यह जानते हों या नहीं, वे अंधकार के राज्य में शैतान और उसकी सेना के पीछे चल रहे हैं। उनकी मृत आत्माओं में उनमें उसकी बुराई और पापी स्वभाव पाया जाता है। शैतान वास्तव में उनका आत्मिक प्रभु और पिता है। इसी कारण यीशु ने एक बार कुछ बचाए न गए धार्मिक अगुवों से कहा था: ''तुम अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो'' (यूह. 8:44)।

यह उस व्यक्ति का रूखा चित्र है जिसका नया जन्म नहीं हुआ है। वह आत्मिक रूप से मृत होकर जीवन में चल रहा है, साथ ही साथ शैतानी स्वभाव से पूर्ण होकर उस अनिवार्य शारीरिक मृत्यु का नेतृत्व करते हुए जिससे वह बहुत डरता है; और चाहे वह इसे जानता हो या नहीं, वह एक दिन सबसे बुरी मृत्यु–अनन्त मृत्यु का अनुभव प्राप्त करेगा, क्योंकि उसे आग की झील में डाला जाना है।

हमारे लिये इसे समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि आत्मिक, शारीरिक और अनन्त मृत्यु पापी मानवजाति और शैतान पर परमेश्वर के क्रोध की अभिव्यक्ति हैं। परमेश्वर ने शैतान को अंधकार के राज्य और उन सभी पर अधिकार करने की अनुमति दी है ''जो अंधकार से प्रेम करते हैं'' (यूह. 3:19) परमेश्वर ने शैतान से कहा, ''तुम अपनी शक्ति से उन्हें बंधक बना सकते हो जिन्होंने स्वयं को मुझे नहीं सौंपा है।'' शैतान मानवजाति के विद्रोह पर परमेश्वर के क्रोध का अधीनस्थ उपकरण बन गया।

क्योंकि सभी ने पाप किया, सभी शैतान की शक्ति के अधीन हैं, उनकी आत्माएं उसके स्वभाव से पूर्ण होकर उसकी इच्छा को पूरा करने की कैद में हैं (2तीमु. 2:26)।

हमारी बंधुआई के लिए प्रायश्चित
The Ransom for Our Captivity

तथापि, हम परमेश्वर का धन्यवाद कर सकते हैं कि उसने मानवजाति पर करुणा की, उसकी करुणा के कारण किसी को भी अपनी दयनीय दशा में बने रहने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि यीशु की प्रतिस्थापित मृत्यु ने ईश्वरीय न्याय के दावों को संतुष्ट किया, कि मसीह पर विश्वास करनेवाले आत्मिक मृत्यु और शैतान की बंधुआई से बच सकें, क्योंकि अब वे परमेश्वर के क्रोध के अधीन नहीं हैं। जब हम प्रभु यीशु पर विश्वास करते हैं तब पवित्र आत्मा हमारी आत्माओं में आता और उसमें से शैतान के स्वभाव को नष्ट करता है, ताकि हमारी आत्माओं का फिर से जन्म हो (देखें यूह. 3:1-16), ताकि हम परमेश्वर के ईश्वरीय स्वभाव के भागी बनें (देखें 2पत. 1:4)।

अब अपने मूल प्रश्न पर लौटते हैं। जब इब्रानियों के लेखक ने कहा कि यीशु ने अपनी सामर्थ के द्वारा ''उसे शक्तिहीन किया जिसका मृत्यु पर अधिकार था, अर्थात् शैतान को'' तो उसका अभिप्राय आत्मिक मृत्यु की सामर्थ से था, जिसे शैतान ने प्रत्येक बचाए न गए व्यक्ति पर बनाए रखा था, उसे उन सभी के लिए तोड़ा गया जो ''मसीह में'' हैं। हमें मसीह के कारण आत्मिक रूप से जीवित बनाया गया है, जिसने हमारे पापों की कीमत को चुकाया।

इसके अतिरिक्त, चूंकि अब हम आत्मिक रूप से न तो मृत हैं और न ही शैतान के प्रभुत्व में हैं, हमें *शारीरिक मृत्यु* से भयभीत होने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि हम जानते हैं कि हमारी प्रतीक्षा क्या है– एक महिमामयी अनन्त मीरास।

अन्त में, यीशु के कारण, हमें *दूसरी मृत्यु*-आग की झील में डाले जाने की पीड़ा से छुड़ाया गया है।

क्या यीशु ने क्रूस पर शैतान को *परास्त* किया था? नहीं, उसने नहीं किया, क्योंकि शैतान और यीशु के बीच कोई युद्ध नहीं था। तथापि, यीशु ने शैतान की आत्मिक मृत्यु पर की शक्ति को शक्तिहीन किया, जिसके द्वारा उसने न बचाए हुए लोगों को पाप का गुलाम बनाया था। शैतान अभी भी बचाए न गए लोगों पर आत्मिक मृत्यु की शक्ति रखता है, लेकिन जो मसीह में हैं, शैतान को उन पर से शक्तिहीन किया गया है।

शक्तियों का निरस्त्र होना
The Disarming of the Powers

कुलुस्सियों 2:13-15 में ''प्रधानताओं और अधिकारों'' को निरस्त्र करने के बारे में पौलुस ने लिखा, जो उसे समझने में भी सहायता करता है;

> और उसने तुम्हें भी जो अपने अपराधों में (आत्मिक रूप में) मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था मिटा डाला, और उस को क्रूस पर कीलों से जड़कर हमारे सामने से हटा दिया है। *और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उन का खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय-जयकार की ध्वनि सुनाई* (पर बल दिया गया है)।

पौलुस इस परिच्छेद में संभावित अलंकारों का प्रयोग करता है। पहले भाग में वह हमारे दोष की तुलना ''विधियों के लेख'' से करता है। जिसकी कीमत हम नहीं चुका सकते थे, उसे मसीह ने हमारे लिये चुकाया, जिसने हमारे पापों के ऋण को क्रूस पर ले लिया।

दूसरे भाग में, जिस तरह से प्राचीन राजा अपने शत्रुओं को उनके हथियार के बिना अपनी शहर की गलियों में निकालते थे उसी तरह से मसीह की मृत्यु ''प्रधानताओं और अधिकारों'' पर विजय थी, अर्थात् दुष्टात्माओं के निम्न स्तर पर, जिन्होंने विद्रोही मनुष्यों को बंधक बनाते हुए उन्हें अपने अधिकार में ले रखा था।

इस परिच्छेद के आधार पर क्या हम यह नहीं कह सकते कि मसीह ने शैतान को *परास्त* किया? शायद, लेकिन कुछ वरीयताओं के साथ। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि इस परिच्छेद में, पौलुस अलंकारिक रूप में लिख रहा था। प्रत्येक अलंकार में वह स्थान आता है जिसमें समानताएं असमानताओं में बदल जाती हैं जैसा हमने बाइबल का अर्थ बताने वाले अध्याय में सीखा था।

कुलुस्सियों 2:13-15 में पौलुस के अलंकारों का अर्थ लागाते हुए हमें सावधान रहना चाहिए। निस्संदेह वहां ''विधियों का लेख'' नहीं था जिस पर हमारे सभी पाप लिखे हुए थे जिसे क्रूस कर ठोंका गया था। तथापि, यह उसका प्रतीक है जिसे यीशु ने पूरा किया।

इसी तरह से न बचाई गई मानवजाति पर अधिकार रखनेवाली दुष्टत्माओं को उनकी तलवारों और ढालों से वंचित करते हुए यीशु के द्वारा गलियों से नहीं निकाला गया था। यीशु ने जो कुछ हमारे लिए पूरा किया उसके लिए पौलुस ने प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया है। हम दुष्टामाओं के द्वारा बंधक बनाए गए थे। तथापि, हमारे पापों के लिए मरने के द्वारा, यीशु ने हमें हमारी बंधुआई से छुड़ाया। यीशु ने दुष्टामाओं से कोई लड़ाई नहीं लड़ी और न ही वे उसके साथ युद्ध में थे। वे, परमेश्वर की धर्मी अनुमति के द्वारा, अपनी सभी शक्तियों के द्वारा हममें रहीं। उनके ''हथियारों'' का संकेत मसीह की ओर नहीं बल्कि हमारी ओर किया गया है। तौभी, यीशु ने उन्हें ''निरस्त्र'' किया। वे हमें अधिक समय तक बंधुआई में नहीं रख सकते।

यह न सोचें कि यीशु और शैतान की दुष्ट आत्माओं के बीच काफी समय से

युद्ध चला आ रहा था और यह कि अन्त में, यीशु ने क्रूस पर युद्ध को जीत लिया। यदि हम यह कहें कि यीशु ने शैतान को पराजित किया, तो हमें यह समझना है कि उसने शैतान को हमारे लिये पराजित किया न कि अपने लिए।

मैंने एक बार अपने घर के आंगन से एक छोटे कुत्ते को भगाया था जो मेरी बेटी को डरा रहा था। मैं यह कह सकता हूँ कि मैंने उस छोटे कुत्ते को *पराजित* किया, लेकिन मैं आशा करता हूँ कि आप यह समझते हैं कि मुझे उससे कोई भय नहीं था, केवल मेरी बेटी के कारण मैंने ऐसा किया। ऐसा ही यीशु और शैतान के साथ था। यीशु ने हमारे लिए एक ऐसे कुत्ते को भगाया जिसने कभी उसे तंग नहीं किया था।

उसने उस शैतान-कुत्ते को कैसे भगाया? हमारे पापों के दण्ड को अपने ऊपर लेते हुए उसने ऐसा किया था, जिससे हमें परमेश्वर के सम्मुख निर्दोष खड़ा करते हुए, हमें परमेश्वर के क्रोध से छुड़ाते हुए; और इस तरह से उन दुष्टात्माओं का विद्रोही मनुष्यों पर अपना नियंत्रण करने का कोई कारण नहीं होगा जिन्हें परमेश्वर ने उन्हें अपने नियंत्रण में लेने की अनुमति दी थी। इसके लिए, परमेश्वर की प्रशंसा हो।

यह हमें दूसरी संबन्धित पौराणिकता की ओर लेकर जाता है।

पुराण कथा # 2: परमेश्वर के स्वर्गदूतों और शैतान के दूतों के बीच आत्मिक क्षेत्र में अभी भी युद्ध जारी है। उन आत्मिक युद्धों के परिणाम को हमारे आत्मिक युद्ध द्वारा निर्धारित किया गया है।

Myth #2: "There are constant battles in the spiritual realm between God's angels and Satan's angels. The outcome of those battles is determined by our spiritual warfare."

हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से सीख चुके हैं कि एक दिन स्वर्ग में मीकाईल और उसके स्वर्गदूतों और शैतान और उसके दूतों के बीच एक लड़ाई होगी। इसके अलावा, पवित्रशास्त्र में एक और स्वर्गदूतों की लड़ाई का वर्णन मिलता है, जो कि दानिय्येल के दसवें अध्याय में है।[85]

दानिय्येल हमें बताता है कि वह फारस के राजा क्रूसू के शासनकाल के तीसरे

85. दो संभावित विरोधों के जवाब हैं: (1) यहोदा मूसा की देह के कारण मीकाईल और शैतान के बीच हुए झगड़े के बारे में बताता है, लेकिन किसी वास्तविक युद्ध का वर्णन नहीं मिलता है। वास्तव में यहूदा हमें बताता है कि मीकाईल ने शैतान को ''बुरा भला कहके दोष लगाने का साहस न किया; पर यह कहा, 'प्रभु तुझे डांटे' (यहूदा 1:9), (2) जब एलीशा और उसका सेवक दोतान नगर में अरामी सेना से घिर गए थे, तब एलीशा ने परमेश्वर से अपने सेवक की आंखें खोले जाने की प्रार्थना की थी (2 राजा 6:15-17)। परिणामस्वरूप उसके सेवक ने ''घोड़ों और अग्निमय रथों'' को देखा, जिसे हम आत्मिक क्षेत्र में स्वर्गदूतों की सेना मान लेते हैं। तथापि यह इस बात का निश्चित संकेत देता कि ये स्वर्गदूत शैतानी दूतों के साथ किसी युद्ध के लिए वहां थे। परमेश्वर द्वारा स्वर्गदूतों का प्रयोग कई बार दुष्ट मानवजाति पर अपने क्रोध को प्रगट करने के लिए किया जाता है, जिसका उदाहरण 2 राजा 19:35 में एक स्वर्गदूत द्वारा 185,000 अरामी सैनिकों का वध करने में मिलता है।

वर्ष में तीन सप्ताह तक शोक कर रहा था, तब एक स्वर्गदूत तिगरिस नदी पर उसके सामने प्रगट हुआ। उस स्वर्गदूत के वहां आने का उद्देश्य उसे इस्राएल के भविष्य के बारे में बताना था, और हम पहले ही इस बारे में संक्षिप्त अध्ययन कर चुके हैं जिसमें दानिय्येल ने पिछले अध्याय में उठाए जाने और अन्त समयों के बारे में बताया था। उनकी बातचीत के दौरान बेनाम स्वर्गदूत ने दानिय्येल से कहा:

> हे दानिय्येल, मत डर, क्योंकि पहले ही दिन को जब तू ने समझने-बूझने के लिये मन लगाया और अपने परमेश्वर के सामने अपने को दीन किया, उसी दिन तेरे वचन सुने गए, और मैं तेरे वचनों के कारण आ गया हूं। *फारस के राज्य का प्रधान* इक्कीस दिन तक मेरा सामना किये रहा; *परन्तु मीकाईल जो मुख्य प्रधानों में से है, वह मेरी सहायता के लिये आया,* इसलिये मैं फारस के राजाओं के पास रहा (दानि. 10:12-13, पर बल दिया गया है)।

दानिय्येल ने जाना कि इस स्वर्गदूत से मिलने से तीन सप्ताह पहले ही उसकी प्रार्थना को सुन लिया गया था, परन्तु स्वर्गदूत को उस तक पहुंचने में तीन सप्ताह का समय लगा। स्वर्गदूत के देरी से आने का कारण ''फारस राज्य का प्रधान'' जो उसके विरुद्ध खड़ा रहा था। मीकाईल के आने पर जो कि ''मुख्य प्रधानों में से एक' है वह उसकी सहायता करने को आ सका।

स्वर्गदूत ने दानिय्येल से अलग होते समय कहा:

> क्या तू जानता है कि मैं किस कारण तेरे पास आया हूं? अब मैं फारस के प्रधान से लड़ने को लौटूंगा और जब मैं निकलूंगा, तब यूनान का प्रधान आएगा। और जो कुछ सच्ची बातों से भरी हुई पुस्तक में लिखा हुआ है, वह मैं तुझे बताता हूं; उन प्रधानों के विरुद्ध तुम्हारे प्रधान मीकाईल को छोड़, मेरे संग स्थिर रहने वाला और कोई भी नहीं है (दानि. 10:20-21)।

पवित्रशास्त्र के इस रोचक परिच्छेद से कई रोचक सच्चाईयों को जाना जा सकता है। पुनः, हम देखते हैं कि परमेश्वर के स्वर्गदूत सर्वसामर्थी नहीं हैं और वे दुष्ट दूतों के साथ लड़ाई में भी जुड़ सकते हैं।

दूसरा, हमने जाना कि कुछ स्वर्गदूत (जैसे मीकाईल) अन्यों की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली होते हैं, (जैसे वह जो दानिय्येल से बोल रहा था)।

वे प्रश्न जिनका हमारे पास कोई जवाब नहीं है
Questions for Which We Have No Answers

हम कह सकते हैं, ''परमेश्वर ने दानिय्येल के पास पहले से ही *मीकाईल* को

क्यों नहीं भेजा जिससे इक्कीस दिन की देरी न होती?'' सच्चाई तो यह है कि बाइबल हमें इस बारे में नहीं बताती कि परमेश्वर ने क्यों ऐसे स्वर्गदूत को दानिय्येल के पास भेजा जिसके बारे में वह निस्संदेह जानता था कि वह मीकाईल की सहायता के बिना ''फारस के प्रधान'' का सामना नहीं कर पाएगा। वास्तव में, हम इस बारे में नहीं जानते कि परमेश्वर संदेश को किसी व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए *किसी भी* स्वर्गदूत का प्रयोग क्यों करेगा। वह व्यक्तिगत रूप से स्वयं क्यों नहीं गया, या श्रव्य रूप में दानिय्येल से क्यों नहीं बोला, या दानिय्येल को इस बारे में बताने को उसे अस्थायी रूप से स्वर्ग क्यों नहीं ले आया? हम इस बारे में नहीं जानते।

लेकिन क्या यह परिच्छेद प्रमाणित करता है कि आत्मिक क्षेत्र में परमेश्वर के स्वर्गदूतों और शैतान के दूतों के बीच युद्ध चलता रहता है? नहीं, यह केवल इतना प्रमाणित करता है कि कई हज़ार वर्ष पूर्व 21 दिनों का संघर्ष परमेश्वर के दुर्बल स्वर्गदूतों और शैतान के ''फारस के प्रधान'' नाम स्वर्गदूत के बीच हुआ था, एक ऐसा युद्ध, जो परमेश्वर चाहता तो कभी न हुआ होता। *पूरी बाइबल में भविष्य में स्वर्ग में होनेवाले अन्य स्वर्गदूतों के युद्ध का वर्णन प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में ही मिलता है।* हो सकता है कि और भी स्वर्गदूतों के युद्ध हुए हों, परन्तु यह केवल एक धारणा ही होगी।

एक पुराणकथा पर आधारित एक पुराण-कथा
A Myth Based Upon a Myth

क्या दानिय्येल और फारस के प्रधान की यह कहानी प्रमाणित करती है कि हमारा आत्मिक युद्ध स्वर्गदूतों के युद्धों के परिणाम का निर्धारण कर सकता है। पुनः, इस विचार में यह माना जाता है (पवित्रशास्त्र के कुछ पदों के आधार पर) कि सदा स्वर्गदूतों के युद्ध होते रहे हैं। परन्तु आइये अंधकार में छलांग लगाकर कहें कि, हां, स्वर्गदूतों के युद्ध सदा चलते रहते हैं। दानिय्येल की यह कहानी क्या यह प्रमाणित करती है कि हमारा आत्मिक युद्ध उन स्वर्गदूतों के युद्धों के परिणाम को निर्धारित कर सकता है जो संभवतः होते रहते हैं?

इस पुराणकथा का समर्थन करनेवालों से यह प्रश्न सामान्यता किया जाता है, ''यदि दानिय्येल एक दिन पश्चात् ही हिम्मत हार जाता तो क्या होता?'' बेशक इस प्रश्न के जवाब को कोई नहीं जानता, क्योंकि सच्चाई यह है कि दानिय्येल ने तब तक प्रार्थना में परमेश्वर की खोज करना न छोड़ा जब तक कि एक बेनाम स्वर्गदूत उस तक न पहुंचा। तथापि, हम यह मानते हैं कि दानिय्येल के आत्मिक युद्ध में बने रहने के कारण बेनाम स्वर्गदूत सफल हो पाया था। यदि दानिय्येल ने आत्मिक युद्ध करना रोक दिया होता तो वह बेनाम स्वर्गदूत फारस के प्रधान के पास से न जा पाता। वे हमें यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि हमें दानिय्येल के

समान आत्मिक युद्ध में बने रहना है, नहीं तो कोई बुरा दूत परमेश्वर के स्वर्गदूत पर विजयी हो सकता है।

सर्वप्रथम, मैं यह बताना चाहता हूं कि दानिय्येल ''आत्मिक युद्ध'' नहीं कर रहा था– वह परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा था। उसका शैतानी स्वर्गदूतों से कुछ कहने, या उन्हें बांधने या उनके विरुद्ध ''युद्ध'' करने का कोई विवरण नहीं मिलता। वास्तव में, दानिय्येल को यह नहीं पता था कि तीन सप्ताह तक स्वर्गदूतों का युद्ध चलता रहा था जब तक कि एक बेनाम स्वर्गदूत उस तक न पहुंचा। उसने वे तीन सप्ताह उपवास और परमेश्वर की खोज करने में बिताए थे।

आइये इस प्रश्न को भिन्न तरह से पूछें: यदि दानिय्येल ने एक या दो दिन बाद उपवास और परमेश्वर की खोज करना छोड़ दिया होता, तो क्या वह बेनाम स्वर्गदूत परमेश्वर के संदेश को उस तक पहुंचाने में असफल हो जाता? हम नहीं जानते। तौभी, मैं यह कहना चाहता हूं, कि उस बेनाम स्वर्गदूत ने कभी भी दानिय्येल से यह नहीं कहा होगा, ''अच्छी बात है कि तुम प्रार्थना करते रहे, अन्यथा मैं कभी ऐसा नहीं कर पाता।'' नहीं, स्वर्गदूत ने अपनी सफलता का श्रेय *मीकाईल* को दिया। निस्संदेह, *परमेश्वर* ने ही उस बेनाम स्वर्गदूत और मीकाईल को भेजा था, और उसने उन्हें दानिय्येल की प्रार्थना के जवाब में भेजा था, यह समझाने के लिए कि इस्राएल में भविष्य में क्या होने वाला था।

इस तरह का विचार करना एक धारणा ही होगी कि यदि दानिय्येल ने उपवास और परमेश्वर की खोज करना छोड़ दिया होता, तो परमेश्वर ने यह कहा होता, ''दानिय्येल ने उपवास और प्रार्थना करना बन्द कर दिया है, इसलिए तुम दोनों स्वर्गदूतो– बेशक तुम दोनों में से एक को मैंने दानिय्येल के प्रार्थना करने के पहले दिन पर ही संदेश के साथ भेज दिया था, अब उस संदेश को दानिय्येल को देने के बारे में भूल जाओ। दानिय्येल की पुस्तक में तब, लगता है कि ग्यारहवां और बारहवां अध्याय न होता।

निस्संदेह, दानिय्येल *प्रार्थना* में (न कि आत्मिक युद्ध में) दृढ़ बना रहा, और परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को भेजने के द्वारा जवाब दिया। हमें भी परमेश्वर से प्रार्थना करने में दृढ़ बने रहना चाहिए, परमेश्वर की इच्छानुसार हमारा जवाब स्वर्गदूत के द्वारा आ सकता है। लेकिन यह न भूलें कि स्वर्गदूतों द्वारा बाइबल के कई लोगों तक संदेश पहुंचाने का वर्णन है, जिसमें तीन सप्ताह की प्रार्थना को छोड़ और किसी के द्वारा प्रार्थना किये जाने का वर्णन नहीं मिलता।[86] हमें संतुलित बने रहने की ज़रूरत है। इसके अतिरिक्त, कुछ ऐसे स्वर्गदूत भी हैं जिन्होंने बाइबल के लोगों को संदेश दिये और किसी भी शैतानी दूत के द्वारा उन्हें रोके जाने का कोई वर्णन नहीं मिलता। हो सकता है कि इन स्वर्गदूतों को भी संदेश पहुंचाने के समय में शैतानी दूतों से लड़ना पड़ा

86. उदाहरण के लिए देखें मत्ती. 1:20; 2:13, 19; 4:11; लूका 1:11-20, 26-38

हो, परन्तु यदि उन्होंने ऐसा किया था, तो हम इस बारे में नहीं जानते, क्योंकि बाइबल हमें इस बारे में नहीं बताती।

अब हम तीसरी सामान्य विश्वास की जाने वाली पुराण कथा पर जाएंगे।

पुराण कथा # 3: ''आदम का पतन होने पर, संसार को नियंत्रण में करने के लिए शैतान को आदम का पट्टा मिल गया।''

Myth #3: "When Adam Fell, Satan Got Adam's Lease to Control the World."

मानवजाति का पतन होने पर शैतान के साथ क्या हुआ था? कुछ का सोचना है कि आदम का पतन होने पर शैतान को एक बड़ी पदोन्नति मिली। उनका कहना है कि आदम मूल रूप से ''इस संसार का ईश्वर'' था, लेकिन आदम का पतन होने पर *शैतान* ने उस स्थान को प्राप्त कर लिया, आदम ने एक प्रकार से उसे पृथ्वी पर जो चाहे करने का अधिकार दे दिया। यहां तक कि परमेश्वर भी उसे रोकने में शक्तिहीन था, क्योंकि आदम के पास शैतान को स्थान देने का ''कानूनी अधिकार'' था और परमेश्वर को आदम के साथ किये गए अपने समझौते को सम्मान देना था जो कि अब शैतान के पास चला गया था। शैतान का अब ''आदम के पट्टे'' पर अधिकार हो गया था।

क्या यह परिकल्पना सत्य है? क्या शैतान ने मानवजाति का पतन होने पर ''आदम के पट्टे'' को प्राप्त किया?

बिलकुल नहीं। शैतान ने मानवजाति के पतन पर परमेश्वर की ओर से एक श्राप और अपनी पूर्ण विनाश की प्रतिज्ञा के अतिरिक्त और कुछ प्राप्त नहीं किया।

सच्चाई यह है कि बाइबल कभी नहीं कहती कि आदम ''इस संसार का ईश्वर'' था। दूसरा, बाइबल कभी भी इस बारे में नहीं बताती कि आदम को अपना कानूनी अधिकार किसी और को देने की छूट थी। तीसरा, बाइबल कभी नहीं बताती कि आदम के पास एक पट्टा है जो एक दिन समाप्त हो जाएगा। ये सभी विचार पवित्रशास्त्र के नहीं हैं।

आदम के पास वास्तव में क्या अधिकार था? उत्पत्ति में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा था, ''फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ और उसको *अपने वश में कर लो, और समुद्र की मछलियों तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो''* (उत्प. 1:28, पर बल दिया गया है)।

परमेश्वर ने आदम से पृथ्वी का ''ईश्वर'' होने के बारे में या इस बारे में कुछ नहीं कहा था कि वह प्रत्येक चीज़ पर नियंत्रण कर सकता है, जैसे मौसम, तथा भविष्य में जन्म लेने वाले सभी लोग इत्यादि पर। उसने आदम और हव्वा को प्रथम मानव होने के कारण सरल रूप में पक्षियों, मछलियों और जानवरों पर प्रभुत्व दिया और उन्हें पृथ्वी को भरने तथा उसे अपने वश में करने की आज्ञा दी।

जब परमेश्वर ने मनुष्य पर अपने न्याय की घोषणा की, उसने आदम के ''इस संसार के ईश्वर'' होने के पद को खोने के संबंध में कुछ नहीं कहा। न ही उसने आदम और हव्वा से पक्षियों, मछलियों और जानवरों पर उनके अधिकार को खोने के बारे में कुछ कहा। वास्तव में, मेरा मानना तो यह है कि मानवजाति अभी भी मछलियों, पक्षियों और ''प्रत्येक रेंगनेवाली चीज़'' पर प्रभुत्ता कर रही है। मानवजाति अभी भी पृथ्वी को भर रही है तथा उसे अपने वश में किये हुए हैं। आदम ने पतन के बाद भी परमेश्वर द्वारा दिये हुए अपने मूल अधिकार को नहीं खोया है।

क्या शैतान ''इस संसार का ईश्वर'' नहीं है?
Isn't Satan "God of This World"?

लेकिन क्या पौलुस ने शैतान को ''इस संसार का ईश्वर'' और यीशु ने उसे ''इस संसार का शासक'' नहीं कहा था? हां, उन्होंने ऐसा कहा था, लेकिन किसी ने भी इस बात को नहीं कहा कि आदम पहले ''इस संसार का ईश्वर'' था या शैतान ने आदम के पतन के बाद उसके इस स्थान का प्राप्त कर लिया था।

इसके अतिरिक्त, शैतान का ''इस संसार का ईश्वर'' होने का शीर्षक यह प्रमाणित नहीं करता कि वह इस पृथ्वी पर जो चाहे कर सकता है या परमेश्वर उसे रोकने में शक्तिहीन है। यीशु ने कहा ''स्वर्ग और *पृथ्वी का सारा* अधिकार मुझे दिया गया है'' (मत्ती 28:18, पर बल दिया गया है)। यदि यीशु के पास पृथ्वी का सारा अधिकार है तो शैतान केवल उसकी अनुमति से ही कार्य कर सकता है।

आकाश और पृथ्वी का सारा अधिकार यीशु को किसने दिया? यह अवश्य ही पिता परमेश्वर ने किया है, जिसके पास यीशु को देने के लिए यह है। इसी कारण यीशु ने अपने पिता को ''आकाश और *पृथ्वी* का प्रभु'' कहा (मत्ती 11:25, लूका 10:21, पर बल दिया गया है)।

इसकी रचना किये जाने के कारण परमेश्वर का इस पर पूरा अधिकार है। उसने आरम्भ में मनुष्यों को इस पर कुछ अधिकार दिया, और परमेश्वर ने मानवजाति को जो दिया था उसने उसे नहीं खोया है।

जब बाइबल शैतान के इस संसार के ईश्वर या शासक होने के बारे में बोलती है, तो इसका अर्थ है कि संसार के लोग (जिनका नया जन्म नहीं हुआ है।) शैतान के पीछे चल रहे हैं। चाहे वे यह जानें या न जानें, वे उसकी सेवा कर रहे हैं।

शैतान द्वारा सम्पदा का प्रस्ताव
Satan's Real-Estate Offer?

शैतान द्वारा प्राप्त किये जाने की अधिकांश कथा मत्ती और लूका द्वारा वर्णित जंगल

में यीशु की शैतान द्वारा परीक्षा लिये जाने की कहानी पर आधारित है। आइये लूका के विवरण की जांच करें कि हम इससे क्या सीख सकते हैं:

> तब शैतान उसे (यीशु को) ले गया और उसको पल भर में जगत के सारे राज्य दिखाए। और उससे कहा; मैं यह सब अधिकार, और इनका विभव तुझे दूंगा, क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है: और जिसे चाहता हूं, उसी को दे देता हूं। इसलिये, यदि तू मुझे प्रणाम करे, तो यह सब तेरा हो जाएगा। यीशु ने उसे उत्तर दिया; लिखा है; कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर; और केवल उसी की उपासना कर (लूका 4:5-8)।

क्या यह घटना प्रमाणित करती है कि इस संसार की प्रत्येक चीज़ पर शैतान का नियंत्रण है, या आदम ने इसे उसे सौंप दिया था, या यह कि परमेश्वर दुष्ट को रोकने में शक्तिहीन है? नहीं, और इसके कई अच्छे कारण हैं।

पहला, हमें यीशु द्वारा किसी को कहे जानेवाले इस कथन ''झूठ का पिता'' के आधार पर अपनी थियोलोजी को बनाने के प्रति सतर्क रहना चाहिए (यूहन्ना 8:44)। शैतान कई बार सच भी बोलता है, लेकिन इस मामले में, हमें अपने चेतावनी के झण्डे को प्रचंड रूप में फहराना चाहिए, क्योंकि जो कुछ शैतान कहता है सदैव परमेश्वर के कहे जाने के प्रतिकूल होता है।

दानिय्येल की पुस्तक के चौथे अध्याय में हम राजा नबूकदनेस्सर के अपमान की कहानी को पाते हैं। नबूकदनेस्सर, जो कि अपने पद और उपलब्धियों के कारण घमण्ड से भरा था, उसे दानिय्येल भविष्यवक्ता ने बताया कि उसे तब तक के लिए जानवर का मन दिया जाएगा जब तक वह यह नहीं जान लेगा कि ''*मनुष्यों के राज्य में परमप्रधान ही प्रभुत्ता करता है, और जिसे चाहे वह उसे दे देता है*'' (दानि. 4:25, पर बल दिया गया है)। इसी घोषणा को इस कहानी के साथ चार बार इसके महत्व को दिखाते हुए किया गया है (देखें दानि. 4:17, 25, 32; 5:21)।

ध्यान दें कि दानिय्येल ने कहा, ''*मनुष्यों के राज्य में परमप्रधान ही प्रभुत्ता करता है।*'' यह संकेत देता है कि परमेश्वर का पृथ्वी पर नियंत्रण है, क्या नहीं है?

इस पर भी ध्यान दें कि दानिय्येल का यह दावा उसके प्रतिकूल प्रतीत होता है जो शैतान ने यीशु से कहा था। दानिय्येल ने कहा कि ''परमेश्वर जिसे चाहे वह उसे दे देता है'', और शैतान ने कहा, ''जिसे चाहता हूं उसी को दे देता हूं'' (लूका 4:6)।

अत: आप किस पर विश्वास करेंगे? मैं तो व्यक्तिगत रूप से दानिय्येल पर विश्वास करूंगा।

तौभी, इस बात की भी संभावना है कि शैतान सच कह रहा था– यदि जो कुछ उसने कहा था, हम उसे भिन्न दृष्टिकोण से देखें।

शैतान ''इस संसार का ईश्वर'' है, जिसके अर्थ को मैंने पहले भी स्पष्ट किया था कि वह अंधकार के राज्य पर शासन कर रहा है, जिसमें परमेश्वर का विरोध करनेवाले हर जाति के लोग आते हैं। बाइबल बताती है कि ''सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है'' (1यूह. 5:19)। जब शैतान ने पृथ्वी के राज्यों पर अपने अधिकार का दावा कर उन्हें जिसे चाहे उसे देने को कहा तो वह उस समय *अपने अंधकार के राज्य* के बारे में बोल रहा था। हमें पवित्रशास्त्र में बताया गया है कि शैतान के पास दुष्ट आत्माओं के कई वर्ग हैं जिनके माध्यम से वह अपने राज्य पर प्रभुत्ता करता है (देखें इफि. 6:12), और यह मानता है कि वह उनका प्रमुख होने के कारण उन्हें उनके स्थान पर रख सकता व हटा सकता है। इस तरह से, शैतान यीशु को अपने बाद नंबर दो का दर्जा देने का प्रस्ताव दे रहा था– कि यीशु को केवल उसके सम्मुख गिरकर उसकी उपासना करना था। यीशु ने इस अवसर को 'पहले' से ही पास कर लिया था।

किसने शैतान को उसका अधिकार दिया?

Who Gave Satan His Authority?

शैतान के इस दावे के बारे में क्या कहा जा सकता है कि उन राज्यों का अधिकार उसे ''सौंपा'' गया है?

पुनः, यहां इस बात की संभावना है कि शैतान झूठ बोल रहा था। लेकिन यहां संदेह का लाभ उसे देते हुए यह मान लेते हैं कि वह सच बोल रहा था।

ध्यान दें, कि शैतान ने यह नहीं कहा कि आदम ने इसे मुझे सौंपा है। जैसा हम पहले देख चुके हैं, आदम ने इसे शैतान को नहीं सौंपा था क्योंकि उसे देने को यह कभी उसके पास था ही नहीं। आदम की प्रभुता मछलियों, पक्षियों, और जानवरों पर थी न कि राज्यों पर। (वास्तव में, आदम का पतन होने पर, प्रभुता करने को लोगों का कोई राज्य नहीं था) इसके अतिरिक्त, यदि शैतान यीशु को अंधकार के राज्य पर प्रभुता करने का अधिकार सौंप रहा था, जो कि सभी बुरी आत्माओं और उद्धार न पाए लोगों से भरपूर है, तब इस बात पर विश्वास नहीं किया जा सकता कि आदम ने इस तरह का कोई अधिकार शैतान को दिया था। शैतान आदम की रचना किये जाने से पूर्व गिराए गए दूतों पर प्रभुत्व कर रहा था।

शैतान का अर्थ यह हो सकता है कि संसार के सभी लोगों ने स्वयं पर उसे अधिकार दे दिया था, क्योंकि वे परमेश्वर के प्रति समर्पित नहीं थे, और इस तरह से जाने या अनजाने में वे उसके प्रति समर्पित थे।

इस बात की भी अच्छी संभावना हो सकती है *परमेश्वर* ने ही उन्हें उसे सौंपा था। पवित्रशास्त्र की रोशनी में इसकी संभावना भी अधिक है कि परमेश्वर ने शैतान से कहा, ''तुम्हें और तुम्हारी बुरी आत्माओं को मेरी ओर से उन सभी पर प्रभुत्व

करने की अनुमति है जो मेरे प्रति समर्पित नहीं हैं।'' इसे स्वीकार करना अभी तो आपके लिए कठिन हो सकता है, लेकिन आप बाद में देखेंगे कि यह शैतान के दावे की श्रेष्ठ व्याख्या होगी। यदि परमेश्वर सच में ''मनुष्यों के राज्य में प्रभुता'' करता है (दानि. 4:25), तो मानवजाति पर शैतान का किसी भी तरह का अधिकार, परमेश्वर द्वारा ही दिया गया है।

शैतान केवल अंधकार के राज्य पर शासन कर रहा है, जिसे ''विद्रोह का राज्य'' भी कहा जा सकता है। जिस दिन से वह स्वर्ग से निकाला गया था उसी दिन से वह उस राज्य पर प्रभुता कर रहा है, जो कि आदम के पतन से पहले हुआ था। आदम के पतन तक, अंधकार का राज्य केवल विद्रोही दूतों से मिलकर बना था। लेकिन आदम पाप कर विद्रोही राज्य से जुड़ गया, तब से शैतान का राज्य न केवल विद्रोही दूतों बना बल्कि विद्रोही मनुष्यों से भी।

आदम की रचना किये जाने से पूर्व शैतान का अंधकार के राज्य पर शासन था, अत: यह न सोचें कि आदम का पतन होने पर ही, शैतान ने कुछ ऐसा प्राप्त किया जो पहले आदम के पास था। नहीं, पाप करने पर आदम एक विद्रोही राज्य से जुड़ गया था जो कुछ उस समय तक बना रहा शैतान का एक राज्य।

क्या पतन से परमेश्वर को आश्चर्य हुआ था?
Was God Surprised by the Fall?

''शैतान द्वारा प्राप्त की जाने वाली'' परिकल्पना का दूसरा प्रवाह परमेश्वर को मूर्ख दिखाता है। क्या परमेश्वर नहीं जानता था कि शैतान आदम और हव्वा की परीक्षा लेगा जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य का पतन होगा? यदि परमेश्वर सर्वज्ञानी है, और वह है, तो वह यह भी जानता होगा कि क्या होनेवाला है। इसी कारण, बाइबल हमें बताती है कि मानवजाति की रचना किये जाने से पूर्व उसने मानवजाति को छुटकारा देने की योजना बनाई (देखें मत्ती 25:34; प्रेरित. 2:2-23; 4:27-28; 1कुरि. 2:7-8; इफि. 3:8-11; 2तीमु. 1:8-10; प्रका. 13:8)।

परमेश्वर ने दुष्ट के पतित होने के बारे में जानते हुए भी उसकी रचना की, और उसने आदम और हव्वा के पतन के बारे में जानते हुए भी उनकी रचना की। शैतान किसी भी तरह से परमेश्वर से कोई चालाकी कर किसी ऐसी चीज़ को प्राप्त नहीं कर सकता था जिसके लिए परमेश्वर नहीं चाहता था कि वह शैतान के पास हो।

क्या मैं यह कह रहा हूं कि परमेश्वर यह चाहता है कि शैतान ''इस संसार का ईश्वर'' हो? जी हां, क्योंकि इससे उसके ईश्वरीय उद्देश्य की पूर्ति होती है। यदि परमेश्वर नहीं चाहे कि शैतान कार्य करे, तो वह उसे रोक सकता है, जैसा हमें प्रकाशितवाक्य 20:1-2 में बताया गया है कि एक दिन वह ऐसा करेगा।

तथापि, मैं यह नहीं कह रहा हूं कि परमेश्वर यह चाहता है कि कोई भी शैतान के शासन में बना रहे। परमेश्वर प्रत्येक को शैतान के प्रभुत्व से बचाना चाहता है (प्रेरित. 26:18; कुलु. 1:13; 1तीमु. 2:3-4; 2 पत. 3:9)। तौभी, परमेश्वर अंधकार से प्रेम करनेवालों पर शैतान को प्रभुत्व करने की अनुमति देता है (देखें यूह. 3:19) - जो कि उसके विरुद्ध विद्रोह करते रहते हैं।

क्या लोगों को शैतान के अंधकार के राज्य से बचाने के लिए हम कुछ कर सकते हैं? जी हां, हम उनके लिए प्रार्थना कर सकते हैं और उन्हें पश्चात्ताप करने तथा सुसमाचार पर विश्वास करने को कह सकते हैं (जैसी आज्ञा यीशु ने हमें दी है)। ऐसा करने पर वे शैतान के अधिकार से छूट सकते हैं। लेकिन यह सोचना कि हम लोगों में पाई जानेवाली अशुद्ध आत्माओं को नीचा दिखा सकते हैं, गलत है। लोग यदि अंधकार में रहना चाहेंगे तो परमेश्वर उन्हें उनके हाल पर छोड़ देगा। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि यदि किसी शहर के लोग संदेश को स्वीकार न करें तो उन्हें अपने पैरों की धूल भी उस शहर में झाड़कर किसी और नगर में चले जाना चाहिए (मत्ती 10:14)। उसने उसी नगर में ठहरे रहकर दुष्ट आत्माओं को नीचा दिखाने को नहीं कहा ताकि लोग अधिक ग्रहणीय बन जाएं। परमेश्वर बुरी आत्माओं को उन लोगों को नियंत्रण में रखे रहने की अनुमति देता है जो पश्चात्ताप करने से इंकार कर उसके विमुख हो जाते हैं।

शैतान पर परमेश्वर के अधिकार का अतिरिक्त प्रमाण

Further Proof of God's Supreme Authority Over Satan

ऐसे और भी बहुत से पवित्रशास्त्र के पद हैं जो बहुतायत से यह प्रमाणित करते हैं कि मनुष्य का पतन होने पर परमेश्वर ने शैतान पर से अपने नियंत्रण को नहीं खोया था। बाइबल बार-बार इस बात की पुष्टि करती है कि परमेश्वर का शैतान पर पूर्ण नियंत्रण रहा है और सदा तक रहेगा। इस सच्चाई के संबंध में आइये सबसे पहले पुराने नियम के कुछ उदाहरणों की जांच करें।

अय्यूब की पुस्तक के पहले दो अध्याय शैतान पर परमेश्वर के अधिकार का एक उत्कृष्ठ उदाहरण हैं। हम वहां शैतान को परमेश्वर के सिंहासन के सामने अय्यूब पर दोष लगाते हुए देखते हैं। अय्यूब पृथ्वी के किसी अन्य मनुष्य से अधिक परमेश्वर की आज्ञा का पालन करता था, और स्वाभाविक रूप में वह शैतान के निशाने पर था। परमेश्वर जानता था कि शैतान का 'ध्यान' अय्यूब पर है (अय्यूब 1:8) और उसने शैतान के द्वारा अय्यूब पर दोष लगाए जाने को सुना कि वह इसी कारण उसकी सेवा करता है क्योंकि उसके पास सभी तरह की आशीषें हैं (देखें अय्यूब 1:9-12)।

शैतान ने परमेश्वर से अय्यूब के चारों ओर बनाए गए बाड़े को हटा लेने को कहा है और उसने परमेश्वर से अय्यूब की आशीषों को ले लेने की विनती की।

परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने एक सीमित मात्रा में शैतान को अय्यूब को दुख देने की अनुमति दे दी। आरम्भ में, शैतान अय्यूब की देह का स्पर्श न कर सका। तथापि, बाद में परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब की देह को पीड़ा पहुंचाने की अनुमति दे दी, तौभी उसने शैतान को अय्यूब को मारने से मना कर दिया (अय्यूब 2:5-6)।

पवित्रशास्त्र का यह एक परिच्छेद स्पष्ट रूप से प्रमाणित करता है कि शैतान जो चाहे वह नहीं कर सकता है। वह परमेश्वर की अनुमति के बिना अय्यूब के स्वास्थ्य को चुरा नहीं सकता था। चूंकि परमेश्वर की अनुमति नहीं थी इस कारण वह अय्यूब को न मार सका।[87] आदम के पतन के बाद भी शैतान पर परमेश्वर का नियंत्रण है।

''परमेश्वर की ओर से'' शाऊल की बुरी आत्मा
Saul's Evil Spirit "From God"

पुराने नियम में अपने क्रोध को प्रगट करने के लिए परमेश्वर द्वारा कई बुरी आत्माओं का प्रयोग किये जाने के उदाहरण हैं। 1शमूएल 16:14 में हम पढ़ते हैं: ''और यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया, और यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा।'' राजा शाऊल की अनाज्ञाकारिता पर परमेश्वर का अनुशासन आने के कारण यह स्थिति उत्पन्न हुई थी।

प्रश्न है, इस वाक्यांश का क्या अर्थ है, ''परमेश्वर की ओर से?'' क्या इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने अपने साथ स्वर्ग में रहने वाली किसी बुरी आत्मा को भेजा था या परमेश्वर ने शैतान की किसी बुरी आत्मा को शाऊल को पीड़ा पहुंचाने को कहा था? मेरे विचार से बाइबल जो कुछ सिखाती है उसके प्रकाश में अधिकांश मसीही दूसरी संभावना को ही स्वीकार करेंगे। पवित्रशास्त्र के इस तरह से कहने का कारण कि बुरी आत्मा ''परमेश्वर की ओर से''थी अथवा यह कि बुरी आत्मा का शाऊल द्वारा परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने का परिणाम था। अत:, हम देखते हैं कि बुरी आत्माएं भी परमेश्वर के नियंत्रण में हैं।

न्यायियों 9:23 में हम पढ़ते हैं, ''परमेश्वर ने अबीमेलेक और शकेम के लोगों के बीच एक बुरी आत्मा भेजी थी,'' ताकि उनके बुरे कार्यों के कारण उन पर ईश्वरीय न्याय आ सके। पुन:, यह बुरी आत्मा परमेश्वर के स्वर्ग से नहीं थी, बल्कि शैतान के क्षेत्र से थी, तथा उन लोगों के बीच उन्हें बुरे कार्य करने की ईश्वरीय अनुमति दी गई थी। बुरी आत्माएं परमेश्वर की अनुमति के बिना किसी के भी विरुद्ध बुरी

87. यह पूरा परिच्छेद इस बात का भी प्रमाण है कि अय्यूब ने ''अपने भय के कारण शैतान के लिए द्वार को नहीं खोला था'', जैसा कि कुछ के द्वारा विश्वास किया जाता है। परमेश्वर ने अय्यूब 2:3 में स्वयं इस संबन्ध में शैतान से कहा था, ''यद्यपि तू ने मुझे उसको अय्यूब को बिना कारण सत्यानाश करने को उभारा, तौभी वह अब तक अपनी खराई पर बना रहा है।'' (पर बल दिया गया है)। मैंने अपनी पुस्तक *परमेश्वर की जांच* पृ. 175-181 में इसका विस्तृत वर्णन किया है। जो हमारी वेबसाइट (www.shepherderul.org) पर अंग्रेज़ी भाषा में पढ़े जाने के लिए उपलब्ध है।

युक्तियां नहीं कर सकती हैं। यदि यह सत्य नहीं है, तो परमेश्वर सर्वशक्तिमान नहीं है। अत:, हम एक बार फिर यह परिणाम निकाल सकते हैं कि आदम का पतन होने पर शैतान ने किसी ऐसे अधिकार को प्राप्त नहीं किया जो कि परमेश्वर के नियंत्रण में नहीं था।

शैतान पर परमेश्वर की सामर्थ के नये नियम के उदाहरण

New Testament Examples of God's Power Over Satan

नया नियम ऐसे अतिरिक्त प्रमाण देता है जो शैतान द्वारा प्राप्त किये जाने की थियोरी का खण्डन करते हैं।

उदाहरण के लिए लूका 9:1 में हम पढ़ते हैं कि यीशु ने अपने बारह शिष्यों को ''दुष्टात्माओं पर अधिकार'' दिया। इसके अतिरिक्त लूका 10:19 में यीशु ने उनसे कहा, ''देखो, मैंने तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का और *शत्रु की सारी सामर्थ* पर अधिकार दिया है, और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी'' (पर बल दिया गया है)।

यदि यीशु ने उन्हें शैतान की *सारी सामर्थ* पर अधिकार दिया है, तो सबसे पहले स्वयं उसके पास अधिकार का होना ज़रूरी है। शैतान परमेश्वर के अधिकार में है। बाद में लूका के सुसमाचार में हम यीशु को पतरस से कहते हुए पढ़ते हैं, ''शमौन, देख, शैतान ने तुम लोगों को मांग लिया है कि गेहूं की नाईं फटके'' (लूका 22:31) यह संदर्भ इस बात का संकेत देता है कि शैतान परमेश्वर से अनुमति पाए बिना पतरस की जांच नहीं कर सकता था। पुन:, शैतान परमेश्वर के नियंत्रण में है।[88]

शैतान के हज़ार वर्ष की कैद की अवधि

Satan's Thousand-Year Prison Term

प्रकाशितवाक्य 20 में जब हम एक स्वर्गदूत द्वारा शैतान के बांधे जाने के बारे में पढ़ते हैं, वहां आदम के पट्टे के समाप्त होने का कोई वर्णन नहीं मिलता है। उसे बन्दी बनाए जाने का कारण स्पष्ट है ''कि वह जाति-जाति के लोगों को फिर न भरमाए'' (प्रका. 20:3)।

रोचक बात है, शैतान के 1000 वर्ष तक बन्दी बनाए जाने के पश्चात् उसे फिर से मुक्त किया जाएगा, और वह ''उन जातियों को जो पृथ्वी के चारों ओर होंगी भरमाएगा'' (प्रका. 20:8)। वे भरमाई गई जातियां यरूशलेम पर हमला करने को अपनी सेना को एकत्रित करेंगी, जहां पर यीशु शासन कर रहा होगा। जिस समय वे शहर को घेर लेंगे, उस समय स्वर्ग से आग उतरकर उन्हें 'भस्म' कर देगी (प्रका. 20:9)।

---

88. 1कुरि 10:13 भी देखें, जो संकेत देता है कि परमेश्वर हमारी परीक्षाओं को सीमित करता है, जो इस बात का संकेत है कि वह क्रोध को सीमित करता है।

क्या कोई मूर्खता में होकर यह कह सकता है कि आदम का पट्टा उन 1000 वर्षों की अवधि के पश्चात् कुछ समय के लिए फिर कार्यरत् होगा, इसी कारण से परमेश्वर शैतान को मुक्त करने को विवश था? कितना बेतुका विचार है।

नहीं, पवित्रशास्त्र के इस भाग से हम यह सीखते हैं कि परमेश्वर का शैतान पर पूरा नियंत्रण है और वह केवल अपनी ईश्वरीय युक्तियों को पूरा करने हेतु ही उसे भ्रमपूर्ण कार्य करने की अनुमति देता है।

भावी हज़ार वर्ष के यीशु के शासन के समय में, शैतान कार्य न कर पाने के कारण, लोगों को भरमा नहीं पाएगा। तौभी, पृथ्वी पर कुछ ऐसे लोग होंगे जो मसीह के शासन में बाह्य रूप से ही आज्ञाकारी होंगे, लेकिन भीतर से उसे सिंहासन से उतरा देखना चाहते होंगे। तौभी, वे यह जानते हुए कोई चाल चलने का प्रयास नहीं करेंगे कि वे उसके तख्ते को उलट नहीं सकते हैं जो ''लोहे का राजदण्ड लिये हुए उन पर राज्य करेगा'' (प्रका. 19:15)।

लेकिन शैतान के रिहा किये जाने पर वह उन्हें भरमा पाएगा जो अपने मन से मसीह से घृणा करेंगे और जो मूर्खतापूर्ण असंभव को करने संभव का प्रयास करेंगे। शैतान को भरमाने की अनुमति दिये जाने पर, लोगों के मन की दशा प्रगट हो जाएगी और तब परमेश्वर धार्मिकता के साथ उनका न्याय करेगा।

बेशक, इसी कारण आज परमेश्वर लोगों को भरमाने की अनुमति शैतान को देता है। हम शैतान के लिए परमेश्वर के उद्देश्य के बारे में बाद में पूरी तरह से अध्ययन करेंगे, परन्तु अब यहां पर कहना पर्याप्त है कि परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई भी भरमाया जाए। तथापि, वह यह जानना चाहता है कि लोगों के मन में क्या है। जो सत्य को जानते हैं वे इस पर विश्वास करते हैं कि शैतान उन्हें मार नहीं सकता। लेकिन परमेश्वर शैतान द्वारा उन्हें मरवाने की अनुमति देता है, जो अपने कठोर हृदय के कारण सत्य को ठुकरा देते हैं।

मसीह विरोधी के बारे में बोलते हुए, पौलुस ने लिखा:

> तब वह अधर्मी प्रगट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुंह की फूंक से मार डालेगा और अपने आगमन के तेज से भस्म करेगा। इस अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ और चिन्ह और अद्भुत काम के साथ। और *नाश होने वालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया जिससे उनका उद्धार होता और इसी कारण परमेश्वर उनमें एक भटका देनेवाली सामर्थ को भेजेगा ताकि वे झूठ की प्रतीति करें। और जितने लोग सत्य की प्रतीति नहीं करते, वरन् अधर्म से प्रसन्न होते हैं, सब दण्ड पाएं* (2 थिस्स. 2:8-12, पर बल दिया गया है)।

ध्यान दें कि इस बात का श्रेय *परमेश्वर* को दिया गया है कि वह एक ''भटका देनेवाली सामर्थ'' को भेजेगा ताकि वे झूठ की प्रतीति करें। लेकिन इस पर भी ध्यान दें कि जो लोग भटकाए जाएंगे वे ऐसे लोग होंगे जिन्होंने ''सत्य पर विश्वास नहीं किया'', इस बात का संकेत देता है कि उनके पास अवसर था, लेकिन उन्होंने सुसमाचार को अस्वीकार दिया। परमेश्वर शैतान को मसीह विरोधी को झूठे चिन्हों और चमत्कारों से समर्थ करने की अनुमति देगा ताकि मसीह को अस्वीकार करनेवाले भटकाए जाएं, और परमेश्वर का अन्तिम उद्देश्य है कि ''उन सभी का न्याय हो।'' इसी कारण आज भी परमेश्वर शैतान को लोगों को भरमाने की अनुमति देता है।

यदि परमेश्वर के पास पृथ्वी पर शैतान को कार्य करने देने का कोई कारण नहीं होता, तो उसे गिराए जाने के बाद वह उसे आसानी से समाप्त कर सकता था। 2पतरस 2:4 में हमें बताया गया है कि कुछ ऐसे पापी स्वर्गदूत हैं जिन्हें परमेश्वर ने *पहले से ही* नरक में डाल दिया ''ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें।'' हमारा सर्वशक्तिमान परमेश्वर उन दूतों के समान ही शैतान या उसके किसी अन्य दूत के साथ भी ऐसा कर सकता था, यदि यह उसके ईश्वरीय उद्देश्य में होता। लेकिन कुछ समय के लिए परमेश्वर के शैतान तथा उसके दूतों के पृथ्वी पर कार्य करने की अनुमति देने को अच्छे कारण हैं।

दुष्टात्माओं को यातना का भय
The Demons' Fear of Torment

इस विशिष्ट पुराण कथा का निकटता से अध्ययन करने पर, गदरेनियों की दुष्टात्माओं की कहानी विचार करने को एक अन्तिम उदाहरण है:

> जब वह उस पार गदरेनियों के देश में पहुंचा तो दो मनुष्य जिन में दुष्टात्माएं थीं, कब्रों से निकलते हुए उसे मिले, जो इतने प्रचण्ड थे, कि कोई उस मार्ग से जा नहीं सकता था। और देखो, उन्होंने चिल्लाकर कहा; ''हे परमेश्वर के पुत्र, हमारा तुझ से क्या काम? *क्या तू समय से पहले हमें दुख देने यहां आया है?*'' (मत्ती 8:28-29, बल दिया गया है)।

इस कहानी का प्रयोग सामान्यता शैतान द्वारा प्राप्त किये जाने की थियोरी के समर्थकों द्वारा अपने विचार की पुष्टि करने को किया जाता है। वे कहते हैं, ''उन दुष्टात्माओं ने यीशु के न्याय की याचना की। वे जानती थीं कि समय से पूर्व अर्थात् आदम के पट्टे के समाप्त होने से पहले उसे उन्हें सताने का कोई अधिकार नहीं है, वह समय जब शैतान और उन्हें सदा के लिए आग की झील में दिन और रात पीड़ा उठाने के लिए डाला जाएगा।''

लेकिन वास्तव में इसका विपरीत ही सत्य है। वे जानती थीं कि यीशु के पास

जब चाहे उन्हें यातना देने का अधिकार और शक्ति थी, इसी कारण उन्होंने उससे दया की याचना की। वास्तव में, वे दुष्टात्माएं बहुत डरी हुई थीं कि परमेश्वर का पुत्र उन्हें पीड़ा के स्थान पर पहले ही भेज सकता है। लूका हमें बताता है कि उन्होंने उससे विनती की कि ''अथाह गड्ढे में जाने की आज्ञा न दे'' (लूका 8:31)। लेकिन शैतान के कुछ वैद्य अधिकार के कारण यदि यीशु के पास अधिकार नहीं होता, तो वे इस तरह से चिन्तित नहीं होतीं।

वे दुष्टात्माएं जानती थीं कि वे पूरी तरह से यीशु की दया पर निर्भर थीं, जैसा कि उनके निवदेन से पता चलता है कि उन्हें देश से बाहर न भेज (मर. 5:10)।, निकट के सूअरों के झुण्ड में प्रवेश करने का उनका निवेदन (मर. 5:12) और उनका, मसीह से 'समय' से पूर्व यातना न देने की याचना करना (लूका 8:31)।

पुराण कथा # 4: इस संसार का ईश्वर होने के कारण शैतान का पृथ्वी की प्रत्येक चीज़ पर नियंत्रण है, जिसमें मानव सरकार, स्वाभाविक विपत्तियां और मौसम भी शामिल हैं।''

Myth #4: "Satan, as 'the god of this world' has control over everything on the earth, including human governments, natural disasters, and the weather."

पवित्रशास्त्र में शैतान को पौलुस द्वारा ''इस संसार का ईश्वर'' कहा गया है (2कुरि. 4:4) और यीशु द्वारा ''इस संसार का शासक'' (यूह. 12:31;14:30;16:11)। शैतान के इन शीर्षकों के आधार पर, बहुतों ने यह मान लिया है कि शैतान का इस पृथ्वी पर पूरा नियंत्रण है। यद्यपि इस विशिष्ट पुराण कथा की कमी को प्रगट करने के लिए हम पहले से ही पवित्रशास्त्र के कई पदों पर विचार कर चुके हैं, इसके साथ ही हमारे लिए और भी पवित्रशास्त्र के पदों को देखना अच्छा होगा ताकि इस बारे में पूरी तरह से जान सकें कि शैतान की शक्ति कितनी सीमित है। हमें इस बारे में सावधान रहना चाहिए कि शैतान के बारे में हमारी समझ का निर्माण केवल उन चार पवित्र शास्त्र के पदों पर नहीं होनी चाहिए जो उसे इस संसार का ईश्वर या शासक कहते हैं।

बाइबल से अधिक जांच करने पर हम पाते हैं कि यीशु ने न केवल उसे 'इस संसार का शासक' कहा, बल्कि उसने अपने स्वर्गीय पिता को 'स्वर्ग और *पृथ्वी* का प्रभु' भी कहा (मत्ती 11:25; लूका 10:21, पर बल दिया गया है)। इसके अतिरिक्त, प्रेरित पौलुस ने न केवल शैतान को इस ''संसार का ईश्वर' कहा, बल्कि उसने यीशु के समान परमेश्वर को ''आकाश और *पृथ्वी* का प्रभु' कहा (प्रेरित. 17:24, पर बल दिया गया है)। यह हम पर प्रमाणित करता है कि न तो पौलुस और न ही यीशु यह चाहते थे कि हम इस तरह से सोचें कि शैतान का इस पृथ्वी पर नियंत्रण है। शैतान का अधिकार सीमित है।

इन पवित्रशास्त्र पदों के बीच पाई जाने वाली एक महत्वपूर्ण भिन्नता संसार और पृथ्वी के शब्दों में मिलती है। यद्यपि हम अक्सर इन दोनों शब्दों का प्रयोग समानार्थी रूप में करते हैं, तौभी मूल यूनानी भाषा में इन दोनों शब्दों का अर्थ समान नहीं है। एक बार उनके बीच के अन्तर को समझने के पश्चात्, पृथ्वी पर परमेश्वर और शैतान के अधिकार की हमारी समझ में नाट्कीय रूप से वृद्धि होती है।

यीशु ने पिता परमेश्वर को *पृथ्वी* का प्रभु कहा है। *पृथ्वी* शब्द यूनानी के गे शब्द से अनुवादित है। यह उस ग्रह का उल्लेख करता है जिसमें हम रहते हैं, और उसी से हिन्दी का *भूगोल* शब्द आया है।

दूसरी ओर, यीशु ने कहा कि शैतान इस *संसार* का शासक है। *संसार* शब्द के लिए यूनानी भाषा में *कोसमोस* का प्रयोग हुआ है, और यह प्राथमिक रूप से क्रम या प्रबन्धन का उल्लेख करता है। यह ग्रह की अपेक्षा लोगों के बारे में बताता है। इसी कारण मसीही प्राय: शैतान को ''इस संसार की *प्रणाली* का ईश्वर'' कहते हैं।

वर्तमान समय में, परमेश्वर का *संसार* पर पूरा नियंत्रण नहीं है क्योंकि इस संसार के सभी लोगों पर उसका पूरा नियंत्रण नहीं है। इसका कारण यह है कि उसने सभी लोगों को अपना स्वामी चुनने का अधिकार दिया है, और बहुतों ने शैतान को अपने स्वामी के रूप में चुना है। निस्संदेह, मानवजाति की स्वतंत्र इच्छा, परमेश्वर की योजना का एक भाग है।

पौलुस ने शैतान को इस *संसार* का ईश्वर लिखते हुए *संसार* शब्द के लिए यूनानी शब्द आयोन का प्रयोग किया है। आयोन का अनुवाद युग के रूप में किया जाता है। शैतान इस वर्तमान युग का ईश्वर है।

इस सबका क्या अर्थ है? *पृथ्वी* वह ग्रह है जिस पर हम रहते हैं। संसार उन लोगों के बारे में बताता है जो वर्तमान समय में इस पृथ्वी पर रहते हैं, और विशिष्ट रूप से कहा जाए तो वे जो यीशु की सेवा नहीं कर रहे हैं। वे शैतान की सेवा कर रहे हैं, और उसकी पापपूर्ण प्रणाली में फंसे हुए हैं। हमसे मसीही होने के कारण इस 'संसार में' होने को कहा गया है न कि 'इस संसार के होने' को (यूह. 17:11,14)। हम अंधकार के राज्य के नागरिकों के बीच रहते हैं, लेकिन हम वास्तव में प्रकाश के राज्य परमेश्वर के राज्य में रहते हैं।

अत: अब हमारे पास जवाब है। इसे सरल रूप से रखा जाए तो: परमेश्वर समस्त पृथ्वी पर नियंत्रण रखता है। परमेश्वर की अनुमति से शैतान का केवल 'संसार की प्रणाली' पर नियंत्रण है, जो कि अंधकार के राज्यों में' रहनेवालों पर नियंत्रण है। इस कारण से प्रेरित यूहन्ना ने लिखा कि ''सारा *संसार* (न कि सारी *पृथ्वी*) उस दुष्ट के वश में पड़ा है'' (1यूह. 5:19)।

इसका अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर का इस संसार या संसार की प्रणाली, या संसार

पर कोई अधिकार नहीं है। दानिय्येल के अनुसार ''मनुष्यों के राज्य में परमप्रधान ही प्रभुता करता है, और जिसे चाहे वहे उसे दे देता है'' (दानि. 4:25)। वह जब चाहे किसी भी व्यक्ति को ऊंचा उठा सकता व दीन कर सकता है। तथापि, सर्वोच्च होने के कारण वह 'मनुष्यों के राज्य में' प्रभुता करता है, वह अपनी इसी परमप्रधानता में मानवजाति के विद्रोही भाग पर शैतान को शासन करने की अनुमति देता है।

शैतान का प्रस्ताव विचारनीय है

Satan's Offer Considered

संसार और पृथ्वी के बीच की यह भिन्नता जंगल में यीशु की परीक्षा को समझने में भी सहायक है। वहां शैतान ने यीशु को ''एक ही क्षण में *संसार* के सभी राज्य'' दिखाए। शैतान यीशु को पृथ्वी पर मानवीय शासन प्रणाली में कोई राजनैतिक पद देने का प्रस्ताव नहीं रख सकता था, जिसे हम प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति कहते हैं। शैतान पृथ्वी के मानव शासकों को उठाता या गिराता नहीं है, यह परमेश्वर करता है।

इसके विपरीत, शैतान ने यीशु को अंधकार के राज्य के सभी उप-राज्यों को दिखाया होगा। उसने यीशु को दुष्ट आत्माओं के अधिकारी वर्ग को दिखाया होगा, जो अपने अपने क्षेत्र में अंधकार के राज्य में कार्यरत् हैं, उनके साथ ही विद्रोही मानवों को भी जो उनके कर्मचारियों के रूप में कार्य करते हैं। शैतान ने यीशु को अपने राज्य को देने का प्रस्ताव रखा। यदि यीशु परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह कर उससे जुड़ जाता। तब यीशु का अंधकार के राज्य पर नियंत्रण हो जाता।

मानव दुनियावी सरकार पर परमेश्वर का नियंत्रण

God's Control Over Earthly, Human Governments

आइये दुनियावी मानव सरकार पर पवित्रशास्त्र के पदों से परमेश्वर के अधिकार की पुष्टि करते हुए शैतान के अधिकार को विशिष्ट रूप से स्थापित करें। कुछ बचाए गए लोगों पर अधिकार होने के कारण शैतान का मानव सरकारों पर भी कुछ अधिकार है। लेकिन अन्त में परमेश्वर ही मानव सरकारों पर परमप्रधान है, और शैतान उतनी ही मात्रा में उनके साथ छल कर सकता है जितनी परमेश्वर उसे अनुमति देता है।

हम पहले ही राजा नबूकदनेस्सर के बारे में दानिय्येल के कथन से जांच कर चुके हैं, परन्तु चूंकि यह इतना स्पष्ट करने वाला है, आइये एक बार फिर इस पर विचार करें।

महान राजा नबूकदनेस्सर अपनी शक्ति और अपनी उपलब्धियों के कारण घमण्ड से फूल गया था, और इसी कारण परमेश्वर ने उसे इतनी निम्न दशा में लाने की आज्ञा दी कि वह जान जाए कि ''परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता

है और उसको जिसे चाहे उसे दे देता है, और वह छोटे से छोटे मनुष्य को भी उस पर नियुक्त कर देता है'' (दानि. 4:17)। नबूकदनेस्सर के राजनैतिक उत्थान का श्रेय निस्संदेह परमेश्वर को जाता है। प्रत्येक दुनियावी अगुवे पर यह बात सत्य लागू होती है। प्रेरित पौलुस ने दुनियावी अगुवों के बारे में बोलते हुए यह घोषित किया कि ''कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर से न हो और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं'' (रोमि. 13:1)।

समस्त ब्रह्मण्ड का मूल और सर्वोच्च अधिकारी परमेश्वर है। यदि किसी के पास कोई अधिकार है तो वह इस कारण से है कि परमेश्वर ने इसके लिए उसे नियुक्त किया है।

लेकिन बुरे शासकों के बारे में क्या कहा जा सकता है? क्या पौलुस का अभिप्राय है कि उन्हें भी परमेश्वर द्वारा स्थापित किया गया है? हां, पौलुस का यही अभिप्राय था। अपने पहले के कुछ पत्रों में पौलुस ने लिखा कि ''मैंने तुझे इसलिये खड़ा किया है, कि तु इनमें अपनी सामर्थ दिखाऊं और मेरे नाम का प्रचार सारी पृथ्वी पर हो'' रोमि 9:17)। परमेश्वर ने कठोर हृदय वाले फिरौन को अपने नाम को महिमा देने के लिए ऊँचा उठाया था। परमेश्वर अपने चमत्कारों के द्वारा अपनी महान सामर्थ को दिखाता है जिस ढीठ व्यक्ति को उसने ऊँचा उठाया था उसे ठोकर खाने का अवसर देते हुए।

क्या यह सच्चाई यीशु के पीलातुस के साथ किये गए वार्त्तालाप के समान नहीं हैं? यीशु द्वारा प्रश्नों का जवाब न दिये जाने पर आश्चर्य करते हुए पीलातुस ने यीशु से कहा, ''मुझसे क्यों नहीं बोलता? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है, और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है? (यूहन्ना 19:10)।

यीशु ने जवाब दिया, ''*यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता,* तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता'' (यूहन्ना 19:11, पर बल दिया गया है)।

पीलातुस के कायर चरित्र को जानते हुए, परमेश्वर ने उसे इस कारण से ऊँचा उठाया था कि यीशु के क्रूस पर मारे जाने की उसकी पूर्वनिर्धारित योजना की पूर्ति हो सके।

पुराने नियम के इतिहास की पुस्तकों का सरसरी तौर से किया गया अध्ययन प्रगट करता है कि परमेश्वर अपने क्रोध को कुछ लोगों पर डालने के लिए कई बार बुरे

89. क्या इसका अर्थ यह है कि हमें शासकों और अगुवों के लिए प्रार्थना नहीं करनी चाहिए, या चुनाव में मतदान नहीं देना चाहिए यह जानते हुए कि परमेश्वर जिसे चाहे उसे हमारे ऊपर ठहरता है? नहीं, प्रजातंत्र में, व्यावहारिक रूप में परमेश्वर का क्रोध बना रहता है। हम जिसे वोट देते हैं उसे ही पाते हैं, और दुष्ट लोग सामान्यता अन्य दुष्ट लोगों को चुनते हैं। इसी कारण धर्मियों को मतदान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त, पुराने और नये नियम दोनों में ही, हमें अपने शासक अगुवों के लिए प्रार्थना करने का निर्देश दिया गया है। (यिर्म 29:7; 1तीमु. 2:1-4) चूंकि परमेश्वर का न्याय कई बार दुष्ट शासक अगुवों के रूप में आता है, हम उससे कुछ करुणा की याचना कर सकते हैं, ताकि हमारा विशिष्ट देश परमेश्वर की ओर से प्रत्येक दण्ड को प्राप्त न करें।

शासकों का प्रयोग करता है। पुराने नियम के कई राष्ट्रों पर अपने न्याय को लाने के लिए परमेश्वर ने राजा नबूकदनेस्सर का प्रयोग किया था।

ऐसे शासकों के असंख्य उदाहरण हैं जिन्हें परमेश्वर ने बाइबल में उठाया व गिराया। उदाहरण के लिये नये नियम में हम हेरोदेस के बारे में पढ़ते हैं, कि जब उसके दरबार के लोग पुकार उठे, ''यह तो मनुष्य का नहीं परमेश्वर का शब्द है'' तो उसने परमेश्वर को महिमा नहीं दी (प्रेरित. 12:22)।

परिणाम? ''उसी क्षण प्रभु के एक स्वर्गदूत ने तुरन्त उसे मारा... और वह कीड़े पड़के मर गया'' (प्रेरित. 12:23)।

स्मरण रखें कि हेरोदेस निश्चित रूप से शैतान के राज्य का नागरिक था, लेकिन वह परमेश्वर के अधिकार क्षेत्र से बाहर नहीं था। निस्संदेह, परमेश्वर यदि चाहे तो किसी भी वर्तमान समय के शासक को गिरा सकता है।[89]

परमेश्वर की व्यक्तिगत साक्षी

God's Personal Testimony

अन्त में आइये पढ़ें कि परमेश्वर ने एक बार पार्थिव मानव राज्य पर अपनी परमप्रधानता के संबंध में भविष्यद्धक्ता यिर्मयाह के द्वारा क्या कहा था।

> यहोवा की यह वाणी है कि ''इस कुम्हार की नाईं तुम्हारे साथ क्या मैं भी काम नहीं कर सकता? देख, जैसा मिट्टी कुम्हार के हाथ में रहती है, वैसा ही हे इस्राएल के घराने, तुम भी मेरे हाथ में हो। जब मैं किसी जाति वा राज्य के विषय कहूं कि 'उसे उखाड़ दूंगा अथवा नाश करूंगा' तब यदि उस जाति के लोग जिसके विषय मैंने वह बात कही हो अपनी बुराई से फिरें, तो मैं उस विपत्ति के विषय जो मैंने उन पर डालने को ठाना हो, पछताऊंगा और जब मैं किसी जाति वा राज्य के विषय कहूं कि 'मैं उसे बनाऊँगा और रोपूंगा, तब यदि वे उस काम को करें जो मेरी दृष्टि में बुरा है और मेरी बात न मानें तो मैं उस भलाई के विषय जिसे मैंने उनके लिए करने को कहा हो, पछताऊंगा'' (यिर्मयाह 18:6-10)।

क्या आप देख सकते हैं कि जिस समय शैतान ने यीशु की परीक्षा ली तब उसके पास ऐसा कोई तरीका नहीं था जिससे वह यीशु को पार्थिव, मानवीय राजनैतिक राज्य पर शासन करने का प्रस्ताव देता? यदि वह सच कह रहा था (जैसा वह बहुत कम करता है) तो वह यीशु को अपने अंधकार के राज्य पर शासन करने का ही अधिकार दे सकता था।

लेकिन मानव शासन पर क्या शैतान का कोई *प्रभाव* है? हां, लेकिन केवल इस

कारण से क्योंकि वह बचाए न गए लोगों का प्रभु है, और जो लोग बचाए नहीं गए हैं वे मानव शासन प्रणाली से जुड़े हैं। तौभी, उसका केवल उतना ही प्रभाव है जितना परमेश्वर चाहता है, और परमेश्वर जब चाहे शैतान की किसी भी योजना का नाश कर सकता है। प्रेरित यूहन्ना ने यीशु के बारे में लिखा, ''पृथ्वी के राजाओं का हाकिम'' (प्रका. 1:5)।

प्राकृतिक विनाश और हानिकारक मौसम का कारण भी क्या शैतान है?

Does Satan Cause Natural Disasters and Adverse Weather?

क्योंकि शैतान ''इस संसार का ईश्वर' है, बहुत से यह भी मानते हैं कि यह मौसम पर नियंत्रण करता है तथा सारे प्राकृतिक विनाशों का कारण भी यही है जैसे सूखा, बाढ़, भूकम्प इत्यादि। लेकिन पवित्रशास्त्र क्या हमें ऐसा सिखाता है? पुन:, हमें सावधान रहना चाहिए कि पवित्रशास्त्र के एक पद के आधार पर हमें शैतान पर अपनी पूरी परिकल्पना को रूप नहीं देना चाहिए कि ''चोर..... केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है'' (यूह. 10:10)। कितनी ही बार मैंने लोगों को इस पद से यह प्रमाण देते हुए सुना है कि चुराना, घात करना या नष्ट करना शैतान की ओर से है। तथापि, बाइबल से अधिक जांच करने पर, हम जान पाते हैं कि परमेश्वर भी स्वयं कई बार घात व नष्ट करता है। कई संभावित परिच्छेदों में से इन तीन पर विचार करें:

> व्यवस्था देनेवाला और हाकिम तो एक ही है, जिसे बचाने और *नाश करने* की सामर्थ है (याकूब 4:12, पर बल दिया गया है)।
>
> मैं तुम्हें चिताता हूं कि तुम्हें किससे डरना चाहिए, *घात करने* के बाद, जिसको नरक में डालने का अधिकार है, उसी से डरो! (लूका 12:5, पर बल दिया गया है)।
>
> जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में *नाश* कर सकता है (मत्ती 10:28, पर बल दिया गया है)।

यदि हम कहें कि घात करने और नाश करने वाली *प्रत्येक* चीज़ शैतान के कार्य से जुड़ी है, तो हम गलती पर हैं। बाइबल में परमेश्वर के द्वारा घात और नाश किये जाने के कई उदाहरण मिलते हैं।

हमें स्वयं से पूछना है, ''*जब यीशु ने चोर के बारे में बोला कि वह चोरी करता, घात करता और नाश करता है तो क्या वह वास्तव में शैतान के बारे में बोल रहा था?*'' पुन:, हमें उसके इस कथन को संदर्भ के साथ पढ़ने की ज़रूरत है। चोरी

करने घात करने और नाश करने को आने वाले चोर के बारे में एक पद पहले यीशु ने कहा, ''जितने मुझसे पहले आए; वे सब *चोर* और डाकू हैं, परन्तु भेड़ों ने उनकी न सुनी''; (यूह. 18:8)। जब हम यूहन्ना 10:1-15 में यीशु के द्वारा स्वयं को अच्छा चरवाहा कहे जाने के उपदेश को पढ़ते हैं तब यह अधिक स्पष्ट हो जाता है कि उसके द्वारा प्रयुक्त किये जानेवाला शब्द *चोर,* झूठे शिक्षकों और धार्मिक अगुवों के संबंध में है।

बुरे मौसम और प्राकृतिक विनाश के विभिन्न दृष्टिकोण

Various Views of Adverse Weather and Natural Disasters

एक तूफान या भूकम्प के आने पर, परमेश्वर पर विश्वास करनेवाले लोगों के मन में एक प्रश्न उठता है: ''यह विपत्ति किसकी ओर से है?'' बाइबल पर विश्वास करने वाले मसीहियों के लिए इसकी केवल दो संभावनाएं हैं: यह या तो परमेश्वर की ओर से हो सकती है या फिर शैतान की ओर से।

कुछ विरोध करते हुए कह सकते हैं, ''ओह नहीं, इसके लिए परमेश्वर दोषी नहीं। लोग दोषी हैं। परमेश्वर उनके पापों का न्याय कर रहा है।''

यदि पाप पर परमेश्वर के न्याय का कारण तूफान और भूकम्प है, तब हम दोष विद्रोही मनुष्यों पर लगा सकते हैं न कि परमेश्वर पर, लेकिन तौभी, *उत्तरदायी* परमेश्वर ही है, क्योंकि उसकी आज्ञा के बिना कोई भी प्राकृतिक विनाश नहीं होता।

अथवा, यदि यह सत्य है कि परमेश्वर पापियों पर अपने न्याय को लाते हुए *शैतान* को तूफान या भूकम्प भेजने की अनुमति देता है, तब हम यह कह सकते हैं कि इसका कारण *शैतान* है, लेकिन, तौभी उत्तरदायी परमेश्वर ही है। इसका कारण यही है कि वह ही शैतान को इस विनाश को लाने की अनुमति देता है, क्योंकि ये विनाश पाप के प्रति उसकी प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप होते हैं।

कुछ का कहना है कि तूफान और भूकम्प के पीछे न तो परमेश्वर है और न ही शैतान, बल्कि वे ''हमारे पापी संसार पर एक प्रतिभास'' हैं। वे प्राकृतिक विनाश के लिए मानवजाति को उत्तरदायी ठहराते हैं, लेकिन वे विषय से भटक जाते हैं। यह व्याख्या परमेश्वर को चित्र से बाहर नहीं कर देती। यदि प्राकृतिक विनाश हमारे पापी संसार'' हमारे प्राकृतिक संसार पर एक प्रतिभास हैं' तो इसके पीछे कौन है? निस्संदेह तूफान *मानव निर्मित* नहीं है। अर्थात् जब वातावरण में झूठ बोला जाता है तो तूफान की मात्रा इससे बढ़ नहीं जाती। कुछ लोगों के व्यभिचार करने पर भूकम्प नहीं आते।

नहीं, यदि तूफान और पाप के बीच कोई संबन्ध है, तो परमेश्वर इससे जुड़ा है, क्योंकि तूफान पाप पर उसके न्याय की अभिव्यक्ति है यदि वे बेतरतीबी से होते हैं, तो परमेश्वर ही उनके बेतरतीबी से होने की आज्ञा देता है, और इसी कारण वह इससे जुड़ा है।

चाहे पाप और प्राकृतिक विनाश के बीच कोई संबंध न भी हो, और परमेश्वर ने संसार की रचना करते समय गलती की हो, जिस कारण भूमि की सतह कई बार बदलती हो और मौसम में बदलाव आता हो, तौभी सृष्टिकर्त्ता होने के कारण भूकम्प और तूफान के लिए परमेश्वर ही उत्तरदायी है, और उसकी गलतियों से लोगों को हानि होती है।

कोई माँ ''मातृ-स्वभाव'' नहीं है।

There is No "Mother Nature"

अत: प्राकृतिक विनाश के प्रश्न पर हमारे पास केवल दो संभावित जवाब हैं। या तो परमेश्वर उत्तरदायी है या शैतान। धर्मशास्त्र के पदों को देखने से पूर्व कि कौन सा जवाब सही है, आइये इन दो संभावित जवाबों पर विचार करें।

यदि प्राकृतिक विनाश का कारण शैतान है, तो परमेश्वर या तो उसे रोक सकता है या नहीं रोक सकता। यदि परमेश्वर शैतान को प्राकृतिक विनाश करने से रोक *सकता* है परंतु रोकता नहीं, तो पुन: उत्तरदायित्व उस पर आता है। उसकी अनुमति के बिना कभी भी विनाश नहीं होता।

और अब दूसरी ओर, कुछ क्षण के लिये यह मान लेते हैं कि परमेश्वर शैतान को रोक *नहीं सकता*, लेकिन वह उसे रोकना चाहता है। क्या यह वास्तव में सही है।

यदि परमेश्वर शैतान को प्राकृतिक विनाश करने से रोक नहीं सकता तो या तो शैतान परमेश्वर से अधिक शक्तिशाली है और या फिर शैतान परमेश्वर से अधिक तेज़ है। ''आदम के पतन पर शैतान के इस संसार पर नियंत्रण पाने'' की थियोरी के समर्थक भी ऐसा ही कहते हैं। वे दावा करते हैं कि चूंकि शैतान ने आदम के पट्टे को चुराया है इस कारण वह पृथ्वी पर जो चाहे कर सकता है। अब परमेश्वर चाहते हुए भी शैतान को नहीं रोक सकता क्योंकि उसे आदम को दिये गए उस पट्टे का सम्मान करना है, जो अब शैतान के पास है। अन्य शब्दों में, परमेश्वर इतना मूर्ख है कि यह नहीं देख पाया कि आदम का पतन होने पर क्या होगा, लेकिन शैतान ने परमेश्वर से अधिक बुद्धिमान होने के कारण उस शक्ति को पा लिया जो परमेश्वर उसे देना नहीं चाहता था। व्यक्तिगत रूप से मैं यह नहीं कहता कि शैतान परमेश्वर से अधिक बुद्धिमान है।

यदि ''शैतान द्वारा प्राप्त की जानेवाली ''थियोरी सही होती, तो हम यह जानना चाहते कि शैतान जितने तूफान और भूकम्प वर्तमान समय में ला रहा है वह उससे अधिक क्यों नहीं लाता, और वह बड़ी संख्या में मसीहियों को अपना निशाना क्यों नहीं बनाता? (यदि आप कहें कि ''क्योंकि परमेश्वर नहीं चाहता कि वह मसीहियों को निशाना बनाए'' तो आप यह मानते हैं कि शैतान परमेश्वर की अनुमति के बिना कार्य नहीं कर सकता)।

विशिष्ट रूप से देखने पर, हमारे प्रश्न के दो संभावित जवाब दिखते हैं या तो (1) भूकम्प और तूफान के पीछे परमेश्वर है या (2) शैतान *परमेश्वर की अनुमति* से कार्य करता है।

क्या आप बता सकते हैं कि इन दोनों में से कौन सा जवाब सही है, परमेश्वर ही क्या इसके लिए उत्तरदायी है? जब लोग कहें, ''परमेश्वर ने उस तूफान को नहीं भेजा-शैतान ने परमेश्वर की अनुमति से किया, ऐसा करके वे सारा उत्तरदायित्व परमेश्वर पर नहीं डालते। यदि परमेश्वर शैतान को तूफान लाने से रोक सकता, चाहे वह ऐसा करना चाहे या नहीं, तो उत्तरदायित्व उसका ही है। मानव विद्रोह पर उनके पाप के कारण *दोष* लगाया जा सकता है (यदि तूफान को परमेश्वर की ओर से भेजा जाता है या न्याय के रूप में परमेश्वर इसे अनुमति देता है), तौभी यह कहना मूर्खतापूर्ण है कि परमेश्वर किसी भी तरह से इसके लिये उत्तरदायी नहीं है।

पवित्रशास्त्र की साक्षी

Scripture's Testimony

''प्राकृतिक विनाश'' के बारे में पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से क्या कहता है? क्या बाइबल इसके लिए परमेश्वर या शैतान को उत्तरदायी ठहराती है? आइये भूकम्प की ओर पहले देखें, क्योंकि बाइबल इसके बारे में बहुत कुछ बताती है।

पवित्रशास्त्र के अनुसार, भूकम्प पापियों पर परमेश्वर के न्याय के रूप में हो सकते हैं। यिर्मयाह में हम पढ़ते हैं: ''उसके (परमेश्वर के) क्रोध से *पृथ्वी कांपती है*, और जाति-जाति के लोग उसके क्रोध को सह नहीं सकते'' (यिर्म. 10:10, पर बल दिया गया है)।

यशायाह चेतावनी देता है,

> और सेनाओं का यहोवा अचानक बादल गरजाता, *भूमि को कंपाता,* और महाध्वनि करता, बवण्डर और आँधी चलाता, और नाश करनेवाली अग्नि भड़काता हुआ उसके पास आएगा (यशा. 29:6, पर बल दिया गया है)।

आप मूसा के दिनों को स्मरण कर सकते हैं, जब पृथ्वी ने खुलकर (कोरह और उसके अनुयायियों को निगल लिया था (देखें गिन. 16:23-24)। यह स्पष्ट रूप से परमेश्वर के न्याय का कार्य था। भूकम्प को लाने के द्वारा परमेश्वर द्वारा न्याय किये जाने के अन्य उदाहरण यहेज. 38:19; भजन. 18:7; 77:18; हाग्गै 2:6; लूका 21:11; प्रका. 6:12; 8:5; 11:13; 16:18 में देख सकते हैं।

पवित्रशास्त्र में वर्णित कुछ भूकम्प ज़रूरी नहीं कि परमेश्वर के न्याय के कारण हों, लेकिन चाहे कुछ भी हो, उसके पीछे परमेश्वर ही था। उदाहरण के लिये, मत्ती के सुसमाचार

के अनुसार, यीशु की मृत्यु पर एक भूकम्प आया था (मत्ती 27:51, 54) और एक उसके पुनरुत्थान पर हुआ था (मत्ती 28:2)। क्या उनके पीछे शैतान था?

जब पौलुस और सीलास मध्यरात्रि में फिलिप्पी कारावास में परमेश्वर की स्तुति में गा रहे थे: ''इतने में एकाएक एक बड़ा *भूईंडोल* हुआ, यहां तक कि बन्दीगृह की नेंव हिल गईं, और तुरन्त सब द्वार खुल गए; और सबके बन्धन खुल पड़े (प्रेरित. 16:26, पर बल दिया गया है)। क्या इस भूईंडाल के पीछे शैतान था ? मैं ऐसा नहीं सोचता। बन्दीगृह के दारोगा ने बचाए जाने के पश्चात् परमेश्वर की सामर्थ की गवाही दी थी। और केवल प्रेरितों के काम पुस्तक में भूकम्प के पीछे केवल परमेश्वर ही नहीं था (देखें प्रेरित. 4:31)।

मैंने कुछ ऐसे मसीहियों के बारे में अभी हाल ही में पढ़ा है जो किसी क्षेत्र के विषय में भूकम्प की भविष्यवाणी किये जाने पर वहां जाकर शैतान के विरुद्ध ''आत्मिक युद्ध'' करते हैं। क्या आप उनकी धारणा की कमी को देख सकते हैं? उस क्षेत्र में रहने वाले लोगों के लिए परमेश्वर से *प्रार्थना* करना उनके लिए पवित्रशास्त्र के अनुसार हो सकता है। और यदि उन्होंने ऐसा किया होता तो उन्हें संभावित भूकम्प क्षेत्र की यात्रा करने में समय बर्बाद करने की कोई आवश्यकता न होती। वे अपने वासस्थान से ही उस स्थान के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। लेकिन एक भूकम्प को रोकने के लिए शैतान से युद्ध करना पवित्रशास्त्र के अनुसार नहीं है।

तूफान या हरिकेन क्या हैं?

How About Hurricanes?

हरिकेन शब्द पवित्रशास्त्र में नहीं मिलता। लेकिन हम निश्चय ही तीव्र वायु के कई उदाहरण इसमें अवश्य पा सकते हैं:

> जो लोग जहाज़ों में समुद्र पर चलते हैं, और महासागर पर होकर व्यापार करते हैं, वे यहोवा के कामों को और उन आश्चर्यकर्मों को जो वह गहरे समुद्र में करता है, देखते हैं, क्योंकि *वह आज्ञा देता है, तब प्रचण्ड बयार उठकर तरंगों को उठाती है* (भजन. 107:23-25, पर बल दिया गया है)।
>
> तब *यहोवा ने समुद्र में एक प्रचण्ड आंधी चलाई,* और समुद्र में बड़ी आंधी उठी, यहां तक कि जहाज़ टूटने पर था (योना 1:4, पर बल दिया गया है)।
>
> इसके बाद मैंने पृथ्वी के चारों कोनों पर चार स्वर्गदूत खड़े देखे, वे पृथ्वी की चारों हवाओं को थामे हुए थे ताकि पृथ्वी, या समुद्र या किसी पेड़ पर, हवा न चले (प्रका. 7:1)।

निस्संदेह परमेश्वर वायु को आरम्भ और समाप्त कर सकता है।[90]

पूरी बाइबल में केवल एक ही जगह पर वायु चलाने का श्रेय शैतान को दिया जा सकता है। ऐसा अय्यूब की परीक्षा के समय हुआ था, जब एक संदेशवाहक ने अय्यूब को बताया था; ''जंगल की ओर से बड़ी प्रचण्ड वायु चली और घर के चारों कोनों को ऐसा झोंका मारा कि वह जवानों पर गिर पड़ा और वे मर गए'' (अय्यूब 1:19)।

अय्यूब की पुस्तक के प्रथम अध्याय को पढ़ने पर हम जान पाते हैं कि अय्यूब के दुर्भाग्य के पीछे शैतान था। तौभी, हमें यह नहीं भूलना चाहिए, कि शैतान परमेश्वर की अनुमति के बिना अय्यूब और उसके बच्चों के साथ कुछ बुरा नहीं कर सकता था। अत:, पुन: हम देखते हैं कि वायु पर परमेश्वर ही अधिकारी है।

गलील में आई आंधी

The Gale on Galilee

उस ''भयंकर आंधी'' के बारे में क्या कहा जा सकता है जो यीशु तथा उसके शिष्यों द्वारा गलील की झील के पार करते समय आई थी? निस्संदेह इसके पीछे शैतान था, क्योंकि परमेश्वर ऐसी आंधी को कभी नहीं भेजेगा जो उस नाव को डुबा दे जिसमें उसका अपना पुत्र हो। जिस राज्य में भेद हो वह बना नहीं रहता और इसी कारण परमेश्वर ऐसी आंधी को क्यों भेजेगा जिससे यीशु और बारह शिष्यों को हानि पहुंचे।

ये अच्छे तर्क हैं, लेकिन कुछ रुककर आइये विचार करें। यदि परमेश्वर ने तूफान को नहीं भेजा, और शैतान ने ऐसा किया, तो हमें यह मानना चाहिए कि परमेश्वर ने शैतान को इसे भेजने की अनुमति दी। अत: इस प्रश्न का जवाब भी दिया जाना चाहिए, परमेश्वर शैतान को एक ऐसी आंधी को भेजने की अनुमति क्यों देता जिससे यीशु और बारह शिष्य को हानि पहुंचती?

क्या इसका कोई जवाब है? शायद परमेश्वर शिष्यों को विश्वास के बारे में सिखा रहा था। शायद वह उनकी परीक्षा ले रहा था। शायद वह यीशु की परीक्षा ले रहा था जो ''सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया तौभी निष्पाप निकला'' (इब्रा. 4:15)। पूर्ण रूप से परीक्षा लिये जाने के लिए, यीशु की डर से परीक्षा होनी थी। शायद, परमेश्वर यीशु को महिमा देना चाहता था। शायद वह उपरोक्त सभी को करना चाहता था।

परमेश्वर इस्राएलियों को यह जानते हुए लाल समुद्र के किनारे पर लेकर आया था कि फिरौन की सेना उन्हें घेर लेगी। लेकिन क्या परमेश्वर इस्राएलियों को छुड़ा नहीं रहा था। अत: वह उन्हें एक ऐसे स्थान पर लेकर जाते हुए जहां उनका कत्ल

90. परमेश्वर का हवा पर नियंत्रण है, इसे प्रमाणित करने वाले अन्य पद हैं: उत्प. 8:11; निर्ग. 10:13,19; 14:21; 15:10; गिन. 11:31; भजन. 48:7, 78:76; 135:7; 147:18;148:8; यशा. 11:15; यिर्म. 10:13; 51:16; यहेज. 13:11,13; आमोस 4:9,13; योना 4:8; हाग्गै 2:17 इनमें से अधिकांश में परमेश्वर ने हवा का प्रयोग न्याय के रूप में किया है।

होता, क्या अपने ही विरोध में कार्य नहीं कर रहा था। क्या यह ''एक राज्य में विभाजन'' होने का उदाहरण नहीं है?

नहीं, क्योंकि परमेश्वर की मंशा इस्राएलियों का कत्ले-आम कराने की नहीं थी और न ही उसकी मंशा यीशु और बारह शिष्यों को गलील की झील में शैतान को तीव्र वायु चलाने की अनुमति देते हुए डुबाने की थी।

इसके अतिरिक्त, बाइबल यह नहीं कहती कि गलील की झील में आंधी को शैतान ने भेजा था, और न ही यह कहती है कि इसे परमेश्वर ने भेजा था। कुछ का कहना है कि ऐसा शैतान ने किया था, क्योंकि यीशु ने वायु को झिड़का था। संभवतः ऐसा हो, लेकिन यह उपुयक्त तर्क नहीं है। यीशु ने *शैतान* को नहीं झिड़का था, उसने आंधी को झिड़का था। पिता परमेश्वर भी ऐसा कर सकता है। इसी कारण, उसने एक ही बार कहे जाने पर आंधी को थाम लिया था, और इसके बाद उसे झिड़कते हुए शांत किया था। यीशु द्वारा आंधी को झिड़का जाना इस बात का प्रमाण नहीं है कि इसे शैतान ने भेजा था।

पुनः, हमें एक ऐसी चीज़ पर अपनी पूरी थियोलोजी को नहीं लगा देना चाहिए जिसका कोई अर्थ नहीं है। मैंने पहले ही पवित्रशास्त्र के कई पदों का उल्लेख किया है जो हवा पर परमेश्वर के नियंत्रण को प्रमाणित करते हैं, और अधिकांश समय उन्हें भेजने का श्रेय परमेश्वर को ही जाता है। मेरा मुख्य रूप से कहना यह है कि ''इस संसार का ईश्वर'' होने पर भी शैतान का हवा पर नियंत्रण नहीं है या वह जब चाहे जिस भी जगह हरिकेन नहीं भेज सकता।

अतः, हरिकेन अथवा भयंकर तूफान के आने पर, हमें इसे परमेश्वर के नियंत्रण से परे चीज़ के रूप में नहीं देखना चाहिए, अर्थात् एक ऐसी चीज़ जिसे वह रोकना तो चाहता है लेकिन रोक नहीं सकता। यीशु द्वारा गलील की झील की आंधी को रोकना इस बात का पर्याप्त प्रमाण होना चाहिए कि परमेश्वर चाहे तो हरिकेन को भी रोक सकता है।

और यदि परमेश्वर हरिकेन तूफान को भेज रहा है (या उसकी अनुमति दे रहा है,) तो इसके पीछे उसका कोई कारण होगा, और एक जवाब इस प्रश्न का कि 'वह इस तरह के तूफान को क्यों भेजेगा जिससे भयंकर विनाश हो' यह होगा कि वह अनाज्ञाकारी लोगों को चेतावनी दे रहा या उनका न्याय कर रहा है।

''लेकिन हरिकेन कई बार मसीहियों को हानि पहुंचाते हैं''
"But Hurricanes Sometimes Harm Christians"

प्राकृतिक विनाश से पीड़ित होने वाले मसीहियों के बारे में क्या कहा जा सकता है? हरिकेन के आने पर, यह केवल गैर-मसीहियों के घरों का ही विनाश नहीं करता

है। क्या यीशु की त्यागपूर्ण मृत्यु के द्वारा मसीही परमेश्वर के क्रोध से मुक्त नहीं किये गए हैं? अत: हम हरिकेन के पीछे परमेश्वर को कैसे कह सकते हैं? क्योंकि ये उसकी अपनी संतान को हानि पहुंचा सकते हैं?

निस्संदेह ये कठिन प्रश्न हैं? तौभी, हमें यह जानना चाहिए कि यदि हम अपने जवाब इस आधार पर देते हैं कि सभी प्राकृतिक विनाशों के पीछे शैतान है तो इसका जवाब सरल नहीं हो सकता। यदि सभी प्राकृतिक विनाशों के पीछे शैतान है, तो परमेश्वर उसे ऐसी चीज़ों को करने की अनुमति क्यों देता है जो उसकी अपनी संतान को हानि पहुंचाने वाली हैं। हमें अभी भी उसी समस्या का सामना करना है।

बाइबल स्पष्ट रूप से बताती है कि जो मसीह में हैं वे ''क्रोध के लिये नहीं हैं'' (1थिस्स. 5:19)। इसी के साथ साथ बाइबल बताती है कि जो परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं करते उन पर ''परमेश्वर का क्रोध रहता है'' (यूह. 3:36)। अत: जब उद्धार पाए हुए उद्धार न पाए हुओं के बीच में रहते हैं तो परमेश्वर का क्रोध उद्धार पाए हुओं को कैसे प्रभावित नहीं करेगा? इसका जवाब है, कई बार ऐसा नहीं हो सकता, और हमें सच्चाई का सामना करना होता है।

निर्गमन के दिनों में, सभी इस्राएली एक ही स्थान पर रह रहे थे और परमेश्वर ने मिस्रियों पर जिन विपत्तियों को भेजा था उनमें से किसी से भी इस्राएलियों को कोई हानि न हुई थी (देखें निर्ग. 8:22-23; 9:3-7; 24-26; 12:23)। लेकिन हम लोग ''मिस्रियों'' के आस-पास रहते और कार्य करते हैं। यदि परमेश्वर को प्राकृतिक विनाश के द्वारा उनका न्याय करना हो तो हम कैसे बच सकते हैं?

इस प्रश्न के जवाब को समझने के लिये *बचना* निश्चय ही कुंजी शब्द है। परमेश्वर द्वारा पृथ्वी पर बाढ़ के भेजे जाने के समय में यद्यपि नूह परमेश्वर के क्रोध से बच गया था, तौभी वह दुर्दशा से होकर गुज़रा, क्यांकि उसे एक विशाल जहाज़ को बनाने में कठिन परिश्रम करने के साथ-साथ बदबूदार जानवरों के साथ एक वर्ष तक बन्द जहाज़ में रहना था (पुराना और नया नियम, नूह की बाढ़ का श्रेय परमेश्वर को देते हैं न कि शैतान को; देखें गिनती 6:17; 2 पत. 2:5)।

जब सदोम और अमोरा पर परमेश्वर का न्याय आया तो लूत अपनी पली के साथ बच गया था, लेकिन उसने गंधक और आग के विनाश में अपनी प्रत्येक चीज़ को खो दिया था। दुष्टों पर आए परमेश्वर के न्याय का प्रभाव धर्मी मनुष्य पर भी पड़ता है।

यीशु ने यरूशलेम के विश्वासियों को स्वयं सेना से घिरा हुए देखने पर पहले से ही पहाड़ों पर भाग जाने को कहा, क्योंकि ये ''पलटा लेने के दिन'' होंगे (लूका 21:22-23)70 ई. में यरूशलेम की रोमी घेराबन्दी परमेश्वर के क्रोधपूर्ण न्याय का संकेत देती है। परमेश्वर की स्तुति हो कि जिन मसीहियों ने मसीह की आज्ञा मानी उन्होंने अपने जीवनों को बचा लिया, लेकिन तौभी उन्होंने उस सब को खो दिया जिसे उन्होंने यरूशलेम में छोड़ दिया था।

उपरोक्त तीनों उदाहरणों में, दुष्टों पर परमेश्वर के न्याय के आने पर परमेश्वर के लोग कुछ मात्रा में ही दुख उठाते हैं। तौभी, हमें इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंच जाना चाहिये कि चूंकि प्राकृतिक विनाश मसीहियों को प्रभावित करते हैं, इसी कारण वे परमेश्वर की ओर से नहीं हैं।

तब हमें क्या करना चाहिए?
What Then Shall We Do?

हम परमेश्वर द्वारा शापित एक संसार में रहते हैं, एक ऐसा संसार जो प्रत्येक समय परमेश्वर के क्रोध का अनुभव पा रहा है। पौलुस ने लिखा, ''परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभिक्त और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है (अभी *प्रगट होनेवाला* नहीं है), जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं (रोमि 1:18)। हम जो कि इस बुरे, परमेश्वर द्वारा शापित संसार में रह रहे हैं, इस पर परमेश्वर के क्रोध के प्रभाव से बच नहीं सकते हैं, चाहे वह हमारे लिये न भी हो।

इस सब को जानने पर, हमें क्या करना चाहिए? सबसे पहले, हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। यिर्मयाह ने लिखा:

> धन्य है वह पुरुष जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिस ने परमेश्वर को अपना आधार माना हो। वह उस वृक्ष के समान होगा जो नदी के तीर पर लगा हो और उसकी जड़ जल के पास फैली हो; जब घाम होगा तब उसको न लगेगा, उसके पत्ते हरे रहेंगे ओर सूखे वर्ष में भी उनके विषय में कुछ चिंता न होगी, क्योंकि वह तब भी फलता रहेगा (यिर्म. 17:7-8)।

ध्यान दें, यिर्मयाह ने यह नहीं कहा कि परमेश्वर पर भरोसा रखनेवाले व्यक्ति को कभी सूखे का सामना नहीं करना पड़ेगा। नहीं, तपन (घाम) और अकाल के आने पर, परमेश्वर पर भरोसा रखनेवाला व्यक्ति ऐसे वृक्ष के समान होगा जिसकी जड़ जल तक फैली होती है। जिस समय उसके चारों ओर का संसार दुख में दिन काट रहा हो, उसके पास आपूर्ति का अन्य स्रोत होगा। इस्राएल में कौवों द्वारा एलिय्याह को भोजन खिलाए जाने की कहानी उदाहरण के रूप में मस्तिष्क में आती है। (देखें 1राजा 17:1-6)। दाऊद ने धर्मियों के बारे में लिखा, ''अकाल के दिनों में वे तृप्त रहेंगे'' (भजन. 37:19)।

लेकिन क्या अकाल शैतान की ओर से नहीं है? नहीं, पवित्रशास्त्र के अनुसार नहीं। उत्तरदायित्व हमेशा परमेश्वर पर आता है, और अकाल नियुक्त लोगों पर परमेश्वर के न्याय के रूप में लाया जाता है। उदाहरण के लिये:

> इसलिये सेनाओं का यहोवा उनके विषय में यों कहता है, ''*मैं*

> *उनको दण्ड दूंगा,* उनके जवान तलवार से, *और उनके लड़के लड़कियां भूखों मरेंगे''* (यिर्म. 11:22, पर बल दिया गया है)।
>
> सुनो, मैं उनके बीच तलवार *चलाऊंगा;* और *महंगी* फैलाऊंगा; और उन्हें ऐसे घिनौने अंजीरों के समान करूंगा जो निकम्मे होने के कारण खाए नहीं जाते (यिर्म. 29:17, पर बल दिया गया है)।
>
> हे मनुष्य के संतान, जब किसी देश के लोग मुझ से विश्वासघात करके पापी हो जाएं, और मैं *अपना हाथ उस देश के विरुद्ध बढ़ाकर उसका अन्न रूपी आधार दूर करूं, और उसमें अकाल डालकर* उसमें से मनुष्य और पशु दोनों को नाश करूं... (यहेज. 14:13, पर बल दिया गया है)।
>
> तुमने बहुत उपज की आशा रखी, परन्तु देखो थोड़ी ही है; और जब तुम उसे घर ले आए, तब मैंने उसको उड़ा दिया। सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, ऐसा क्यों हुआ? क्या इसलिये नहीं; कि मेरा भवन उजाड़ पड़ा है और तुम में से प्रत्येक अपने अपने घर को दौड़ा चला जाता है? इस कारण आकाश से ओस गिरना, और पृथ्वी से अन्न उपजाना दोनों बन्द हैं। और मेरी आज्ञा से पृथ्वी और पहाड़ों पर, और अन्न और नये दाखमधु पर, और ताज़े तेल पर, और जो कुछ भूमि से उपजता है उस पर, और मनुष्यों और घरेलू पशुओं पर, और उनके परिश्रम की सारी कमाई पर भी अकाल पड़ा है (हाग्गै 1:9-11, पर बल दिया गया है)।

उपरोक्त चौथे उदाहरण में, हम पढ़ते हैं कि इस्राएलियों पर अकाल का दोष उनके पाप के कारण दिया गया है, लेकिन तौभी, इसे भेजने की ज़िम्मेदारी परमेश्वर ने ली।[91]

यदि बुरे लोगों पर अकाल परमेश्वर भेजता है, और हमें उन बुरे लोगों के बीच रहना है, तो हमें भरोसा रखना चाहिए कि परमेश्वर ही हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा। पौलुस ने पुष्टि की कि अकाल हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकता: ''कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या *अकाल,* या नंगाई, या जोखिम, या तलवार?'' (रोमि. 8:35, पर बल दिया गया है)। ध्यान दें, पौलुस ने यही नहीं कहा कि मसीही कभी भी अकाल का सामना नहीं करेंगे, बल्कि

---

91. परमेश्वर द्वारा अकाल भेजे जाने के अतिरिक्त संदर्भों के लिए देखें-व्यवस्था. 32:23,24; 2शमू. 21:1; 24:12-13; 2 राजा 8:1; भजन. 105:16; यशा. 14:30; यिर्म. 14:12,15-16; 16:3-4; 24:10; 27:8; 34:17; 42:17; 44:12-13; यहेज. 5:12, 16-17; 6:12; 12:16; 14:21; 36:29; प्रका. 6:8; 18:8)। यीशु ने स्वयं कहा कि परमेश्वर धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है'' (मत्ती. 5:45)। परमेश्वर वर्षा को नियंत्रित करता है।

यह कि वे इसका सामना करेंगे, पवित्रशास्त्र का विद्यार्थी होने के कारण वह जानता था कि अकाल परमेश्वर द्वारा दूसरों का न्याय करने को भेजे जा सकते हैं।

आज्ञाकारिता और बुद्धि
Obedience and Wisdom

दूसरा, संसार के लिए निर्मित परमेश्वर के क्रोध से बचने के लिये हमें आज्ञाकारी होने के साथ-साथ ईश्वरीय बुद्धि का प्रयोग करना चाहिए। नूह को अपना जहाज़ बनाना था, लूत को पहाड़ियों की ओर जाना था, यरूशलेम के मसीहियों को अपने नगर से भागना था; इन सभी में दुष्टों पर परमेश्वर का न्याय आने पर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए स्वयं को बचाना था।

यदि मैं एक तूफानग्रस्त क्षेत्र में रहता, तो मैं या तो एक इतना मज़बूत घर बनाता जो हवा में उड़ नहीं सकता या फिर इतना सस्ता घर बनाता जिसके ढह जाने पर मैं फिर से घर बना सकता। और मैं प्रार्थना करता। प्रत्येक मसीही को प्रार्थना करने के साथ-साथ उस एक के प्रति संवेदनशील रहना चाहिए जिसके लिये यीशु ने प्रतिज्ञा की कि वह ''तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा'' (यूह. 16:13), ताकि वे परमेश्वर को क्रोध से बच सकें।

प्रेरितों के काम 11 में हम भविष्यद्धक्ता अगबुस के बारे में पढ़ते हैं जिसने उस आनेवाले अकाल के बारे में चिताया जो यहूदिया में रहने वाले मसीहियों का विनाश कर सकता था। परिणामस्वरूप पौलुस और बरनबास द्वारा उनकी सहायता हेतु भेंट को लिया गया (देखें प्रेरित. 11:28-30)।

क्या ऐसा आज हो सकता है? बेशक, क्योंकि पवित्र आत्मा बदला नहीं है, न ही परमेश्वर का प्रेम समाप्त हुआ है। तौभी, दुर्भाग्यवश, मसीह की देह में कुछ ऐसे हैं जिन्होंने स्वयं को पवित्र आत्मा के दानों और प्रगटीकरण के लिए खोला नहीं है, क्योंकि वे ''आत्मा को बुझा कर'' परमेश्वर से सर्वोत्तम पाने से चूक जाते हैं।

अपनी जीवन कथा में, फुल गॉस्पल बिज़नसमैंन के अन्तिम अध्यक्ष और संस्थापक देमोस शकायरन स्मरण करते हैं कि 1800 के अन्तिम वर्षों में परमेश्वर एक आशीषित बालक, भविष्यद्धक्ता से अरमेनिया में रहने वाले मसीहियों के लिये कैसे बोला था। उसने उन्हें एक ओनवाले विनाश की चेतावनी दी थी, और इसके परिणामस्वरूप हज़ारों पेन्टिकोस्टल मसीही जो इस तरह के अलौकिक प्रगटीकरण पर विश्वास करते थे, वे देश से चले गए, जिसमें शकायरन के दादा-दादी भी थे। कुछ समय बाद ही अरमेनिया पर तुर्की हमला हुआ जिसमें हज़ारों अरमेनिया वासी मारे गए, जिनमें वे मसीही भी शामिल थे जिन्होंने परमेश्वर की चेतावनी को मानने से इंकार कर दिया था।

हमें पवित्र आत्मा के लिये खुले रहने को बुद्धिमान बनना होगा और इसी के

साथ-साथ परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी भी बने रहना होगा, नहीं तो यह संभव होगा कि हम परमेश्वर के क्रोध का अनुभव करें, जिसका अनुभव वह वास्तव में हमें कराना नहीं चाहता है। एलीशा ने एक बार एक स्त्री को निर्देश दिया ''अपने घराने समेत यहां से जाकर जहां कहीं तू रह सके वहां रह, क्योंकि यहोवा की इच्छा है कि अकाल पड़े, और वह इस देश में सात वर्ष तक बना रहेगा'' (2राजा 8.1)। यदि इस स्त्री ने भविष्यद्धक्ता की बात न मानी होती तो क्या होता?

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में हम परमेश्वर के लोगों के लिए ''बाबुल'' से निकल आने की चेतावनी के विषय में पढ़ते हैं कि वे उस नगर पर आनेवाले परमेश्वर के क्रोध में न फंसें:

> फिर मैंने स्वर्ग से किसी और का शब्द सुना, कि ''हे मेरे लोगो, उसमें से निकल आओ; कि तुम उसके पापों में भागी न हो, और *उसकी विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पड़े।* क्योंकि उसके पाप स्वर्ग तक पहुंच गए हैं, और उसके अधर्म परमेश्वर को स्मरण आए हैं इस कारण एक ही दिन में उस पर विपत्तियाँ आ पड़ेंगी, अर्थात् मृत्यु, शोक और अकाल, वह आग में भस्म कर दी जाएंगी, क्योंकि उसका न्यायी प्रभु परमेश्वर शक्तिमान है'' (प्रका. 18:4-5, 8 पर बल दिया गया है)।

सारांश में, मौसम और प्राकृतिक विनाश पर परमेश्वर ही प्रधान है। परमेश्वर ने बाइबल में प्रकृति पर स्वयं को बार-बार निम्न लिखित के द्वारा प्रधान प्रमाणित किया: नूह के दिनों में 40 दिनों तक वर्षा करने के द्वारा, इस्राएल के शत्रुओं पर ओलों की वर्षा के साथ-साथ अन्य विपत्तियों को भेजते हुए, योना की नाव के विरुद्ध चलने वाली हवा को शांत करते हुए, गलील की झील में तूफान को डांटते हुए। जैसा यीशु ने कहा, वह ''स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु'' है (मत्ती 11:25)। प्रकृति पर परमेश्वर के अतिरिक्त प्रभुत्व के प्रमाण हेतु अतिरिक्त पवित्रशास्त्र के पदों के लिए देखें-यहोशू 10:11; अय्यूब 38:22-38; यिर्म. 5:24; 10:13; 31:35; भजन. 78:45-49; 105:16; 107:33-37; 135:6-7; 147:7-8, 15-18; मत्ती 5:45; प्रेरित. 14:17

कुछ प्रश्नों के जवाब

A Few Questions Answered

यदि परमेश्वर अकाल, बाढ़ और भूकम्प के द्वारा लोगों का न्याय कर रहा है, तो परमेश्वर के प्रतिनिधि होने के कारण, क्या हमारे लिए उन लोगों की मदद करना गलत होगा, जिन्हें परमेश्वर दण्ड दे रहा है?

नहीं; बिलकुल नहीं। हमें यह जानना चाहिए, कि परमेश्वर प्रत्येक से प्रेम करता है, जिसमें उसके द्वारा न्याय किये जानेवाले लोग भी आते हैं। हमारे कानों को यह

सुनना अजीब लग सकता है कि प्राकृतिक विनाश द्वारा परमेश्वर का न्याय भी उसके प्रेम का संकेत है। ऐसा कैसे हो सकता है? प्राकृतिक विनाश के द्वारा उत्पन्न परेशानियों और कठिनाइयों के माध्यम से परमेश्वर उन लोगों को चेतावनी दे रहा है जिनसे वह प्रेम करता है कि वह पवित्र और न्यायी है, और पाप का एक परिणाम है। परमेश्वर लोगों को अपने लिए उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता का अनुभव कराने को उन्हें अस्थाई दुख में डालता है ताकि वे आग की झील से बच सकें। यही प्रेम है!

जब तक लोग जीवित हैं, परमेश्वर उन्हें अपनी करुणा को दिखाते हुए उन्हें पश्चात्ताप करने का समय देता है। अपनी सहानुभूति और सहयोग के द्वारा, हम उन लोगों पर परमेश्वर के प्रेम को प्रगट कर सकते हैं जो परमेश्वर के अस्थायी क्रोध का अनुभव कर रहे हैं, लेकिन उसके अनन्त क्रोध से कौन बच सकता है? प्राकृतिक विनाश संसार के उन लोगों तक पहुंचने का माध्यम है जिनके लिये यीशु मारा गया।

इस जीवन में लोगों तक सुसमाचार के साथ पहुँचना क्या महत्वपूर्ण चीज़ नहीं है? यदि हम अनन्त दृष्टिकोण से देखें तो प्राकृतिक विनाश के पीड़ितों का दुख आग की झील में डाले जानेवालों के सामने कुछ भी नहीं है। यह सच है कि लोग दुखी होने पर सुसमाचार को अधिक ग्रहण करने वाले बन जाते हैं। इसके कई बाइबल संबन्धी उदाहरण हैं– पड़ोसी राष्ट्रों के उत्पीड़न के समय में इस्राएल के पश्चात्ताप करने से लेकर यीशु के उड़ाऊ पुत्र की कहानी तक। मसीहियों को प्राकृतिक विनाश को ऐसे समयों के रूप में देखना चाहिए जबकि फसल बहुत पक जाती है।

आइये, सच बताएं
Let's Tell the Truth

तूफान या भूकम्प के पश्चात् अपने जीवन के एक-एक खण्ड को जोड़नेवालों के लिये हमारा संदेश क्या होना चाहिए? यदि वे अपनी दुर्दशा के लिए कोई थियोलोजिकल जवाब मांगें तो हम उसका जवाब कैसे देंगे? जो बाइबल सिखाती है, आइये उसके प्रति ईमानदार बनें, और लोगों को बताएं कि परमेश्वर पवित्र है और यह कि ये सब उनके पापों का परिणाम हैं। आइये, उन्हें बताएं कि हरिकेन की भयंकर आवाज़ तो है लेकिन यह सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सामर्थ का एक छोटा सा नमूना है, और जबकि वे अपने घर के हिल जाने के भय से भयभीत हैं, यह भय उसकी तुलना में कुछ नहीं है जिसमें वे आग की झील में होंगे। और उन्हें बताएं कि हम सभी को तो आग की झील में डाला जाना है, तौभी परमेश्वर करुणा करके हमें पश्चात्ताप करने, और यीशु में विश्वास करने का समय देता है, जिसके द्वारा हम परमेश्वर के क्रोध से बच सकते हैं।

कुछ कहते हैं; लेकिन हमें लोगों को परमेश्वर के बारे में डराना नहीं चाहिए। क्या हमें ऐसा करना चाहिए? इसका जवाब पवित्रशास्त्र में मिलता है; ''यहोवा का भय मानना बुद्धि का मूल है'' (नीति. 1:7)। जब तक लोग परमेश्वर से नहीं डरते हैं, वे वास्तव में कुछ नहीं जानते।

यदि लोग परमेश्वर से क्रोधित हो जाएं तो क्या होगा?

What if People Become Angry With God?

लेकिन क्या लोग अपने दुखों के कारण परमेश्वर पर क्रोधित नहीं होंगे? शायद वे ऐसा करेंगे, लेकिन हमें उदारता के साथ उनके घमण्ड को दिखाने में उनकी सहायता करनी है। परमेश्वर द्वारा उनके साथ किये जाने वाले व्यवहार के लिये किसी को भी उससे शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि बहुत समय पूर्व ही हमारा नरक में जाना निर्धारित कर दिया गया था। अपनी विपत्ति के लिए परमेश्वर को शाप देने की अपेक्षा लोगों को इस कारण से उसकी स्तुति करनी चाहिए कि उसने उनसे प्रेम करने के कारण उन्हें चेतावनी दी। प्रत्येक की उपेक्षा करने का अधिकार परमेश्वर को है कि उन्हें उनके नरक जाने वाले मार्ग पर छोड़ दे। लेकिन परमेश्वर लोगों से प्रेम करता है और प्रतिदिन वह उन्हें बुलाता है। वह सेब के पेड़ों को फलवन्त करने, पक्षियों के गीतों, पर्वतों के प्रताप, और अनगिनत तारों के चमकने के द्वारा उन्हें प्रतिदिन बुलाता है। वह उन्हें उनके विवेक, अपनी देह-कलीसिया और अपने पवित्र आत्मा के द्वारा बुलाता है। लेकिन वे उसकी आवाज़ की उपेक्षा कर देते हैं।

निश्चय ही परमेश्वर लोगों को दुख नहीं देना चाहता, लेकिन जब वे लगातार उसकी उपेक्षा करते रहते हैं, तो वह उनके ध्यान को अपनी ओर लगाने के लिये उन्हें विनाशकारी स्थिति में डालता है। जिनमें हरिकेन, भूकम्प, बाढ़ और अकाल आते हैं। परमेश्वर इन विपत्तियों के द्वारा लोगों के दीन होने की आशा करता है।

क्या परमेश्वर अपने न्याय में अन्यायी है?

Is God Unfair in His Judgment?

जब हम बाइबल के दृष्टिकोण से परमेश्वर और अपने संसार को देखते हैं, केवल तब ही हम सही विचार करते हैं। बाइबल के दृष्टिकोण के अनुसार हर कोई परमेश्वर के क्रोध के योग्य है, लेकिन परमेश्वर करुणा करनेवाला है। जब पीड़ित लोग कहते हैं कि वे परमेश्वर की ओर से अच्छे व्यवहार को पाने के योग्य हैं, तो परमेश्वर क्रोधित होता है। प्रत्येक अपनी योग्यता से अधिक परमेश्वर की करुणा को प्राप्त कर रहा है।

इस बात को स्मरण रखते हुए, यीशु ने एक दो समकालीन विपत्तियों के बारे में कहा। लूका के सुसमाचार में हम पढ़ते हैं:

> उस समय कुछ लोग आ पहुंचे, और उससे उन गलीलियों की चर्चा करने लगे, जिनका लोहू पीलातुस ने उन ही के बलिदानों के साथ मिलाया था। यह सुनकर उसने उत्तर में उनसे यह कहा, ''क्या तुम समझते हो कि ये गलीली और सब गलीलियों से पापी थे कि उन पर ऐसी विपत्ति पड़ी? मैं तुम से कहता हूं, कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे। या क्या तुम समझते हो, कि वे अठारह जन जिन पर शिलोह का गुम्मट गिरा, और वे दब कर मर गए; यरूशलेम के और सब रहनेवालों से अधिक अपराधी थे? मैं तुम से कहता हूं कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिरोओगे तो तुम भी सब इसी रीति से नाश होंगे'' (लूका 13:1-5)।

पीलातुस के हाथों मारे जाने वाले गलीली यह नहीं कह सकते थे, ''पीलातुस के हाथों से हमें न बचाकर परमेश्वर अन्याय कर रहा है।'' नहीं, वे पापी थे जो कि मारे जाने के ही योग्य थे। और यीशु के अनुसार, बचे हुए गलीलियों के लिये यह निष्कर्ष निकालना गलत होगा कि वे उन मारे जानेवालों से कम पापी थे। उन्होंने परमेश्वर से महान समर्थन को नहीं *पाया* था– उन्हें बड़ी करुणा *दी* गई थी।

मसीह का संदेश स्पष्ट था, ''तुम *सभी* पापी हो। पाप का परिणाम है। तुम अब तक परमेश्वर की करुणा के कारण ही जीवित हो। अत: इससे पूर्व कि तुम्हारे लिये देर हो जाए पश्चात्ताप करो।''

यीशु ने परमेश्वर की करुणा पर एक दृष्टांत के साथ उन त्रासदियों पर अपनी टिप्पणी की:

> फिर उसने यह दृष्टांत भी कहा, कि किसी की अंगूर की बारी में एक अंगूर का पेड़ लगा हुआ था: वह उसमें फल ढूंढने आया, परन्तु न पाया। तब उसने बारी के रखवाले से कहा, ''देख तीन वर्ष से मैं इस अंजीर के पेड़ में फल ढूंढने आता हूं, परन्तु नहीं पाता, इसे काट डाल कि यह भूमि को भी क्यों रोके रहे।'' उसने उस को उत्तर दिया कि ''हे स्वामी, इसे इस वर्ष तो और रहने दे; कि मैं इसके चारों ओर खोदकर खाद डालूं। सो आगे को फले तो भला, नहीं तो उसे काट डालना'' (लूका 13:6-9)।

यहां परमेश्वर के न्याय और करुणा को उद्धृत किया गया है। परमेश्वर का न्याय कहता है, ''बेकार वृक्ष को काट डाल!'' लेकिन उसकी करुणा याचना करती है, ''नहीं फल लाने के लिए इसे और समय दे।'' मसीह के बिना रहनेवाला प्रत्येक व्यक्ति उस वृक्ष के समान है।

क्या हम हरिकेन (तूफान) और बाढ़ को झिड़क सकते हैं?
Can We Rebuke Hurricanes and Floods?

प्राकृतिक विनाश के संबंध में एक अन्तिम प्रश्न-क्या यह सत्य नहीं कि यदि हममें पर्याप्त विश्वास हो, तो हम प्राकृतिक विनाश को होने से रोक सकते या झिड़क सकते हैं?

विश्वास करने का अर्थ परमेश्वर की प्रगट की गई इच्छा पर विश्वास करना है। इसी कारण विश्वास परमेश्वर के वचन पर पाया जाता है, नहीं तो यह विश्वास नहीं बल्कि केवल आशा या धारणा ही होगा। बाइबल में परमेश्वर द्वारा तूफान या बाढ़ को झिड़कने के विषय में दी गई कोई प्रतिज्ञा नहीं है, और इसी कारण एक व्यक्ति ऐसा करने का विश्वास नहीं कर सकता (परमेश्वर द्वारा उसे दिये गए विशिष्ट विश्वास को छोड़)।

मैं कुछ और स्पष्ट करता हूं। हरिकेन या तूफान को झिड़कने का विश्वास करने का केवल एक तरीका यह है कि यदि वह व्यक्ति जानता हो कि परमेश्वर उसे भेज कर विनाश नहीं लाना चाहता। जैसा, हम पवित्रशास्त्र से सीखते हैं कि परमेश्वर का ही वायु पर नियंत्रण है और इसी कारण वही हरिकेन के लिए उत्तरदायी है। अत: किसी के लिए भी इस तरह का विश्वास रखना असंभव होगा कि जबकि परमेश्वर ने हरिकेन के होने की आज्ञा दे दी हो तो वह ही उसे रोक सकता है। ऐसा केवल परमेश्वर द्वारा हरिकेन को न लाने को परमेश्वर द्वारा अपना मन बदलने पर ही हो सकता है, जो वह प्रार्थना के जवाब में अपनी करुणा दिखाते हुए कर सकता है या फिर उन लोगों द्वारा पश्चात्ताप किये जाने पर जिनका वह न्याय करना चाहता हो (योना के दिनों में नीनवे की कहानी इसके एक उदाहरण के रूप में स्मरण आती है)। तौभी, परमेश्वर द्वारा अपना मन बदले जाने पर भी, किसी में भी हरिकेन को झिड़कने या शांत करने का विश्वास तब तक नहीं हो सकता जब तक कि वह व्यक्ति यह न जान ले कि परमेश्वर ने अपने मन को बदला है, और यह भी न जान ले कि परमेश्वर चाहता है कि वह तूफान को झिड़के व शांत करे।

एक बड़ी आंधी को झिड़कने व शांत करनेवाला एकमात्र व्यक्ति यीशु था। हममें से कोई भी इसे तब ही कर सकता है जब इसके लिए हमें परमेश्वर द्वारा ''विश्वास का दान'' दिया गया हो (या फिर जैसा इसे कई बार ''विशेष दान'' कहा जाता है), जो कि कुरिन्थियों 12:7-11 में वर्णित आत्मा के नौ वरदानों में से एक है। इसलिए जब तक परमेश्वर आपको आनेवाले तूफान को झिड़कने के लिए विशेष विश्वास न दे, तो आपको विश्वास में होकर ऐसा नहीं करना चाहिए। आपको इससे बाहर आ जाना चाहिए। मेरी सलाह है कि आप परमेश्वर की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें,

और उससे उन पर करुणा करने को कहें जिनका वह न्याय कर रहा है, उससे उनके जीवनों को बचाने की मांग करते हुए ताकि उनके पास पश्चात्ताप करने का अधिक समय हो।

ध्यान दें कि जिस समय पौलुस को बन्दी बनाकर रोम ले जाया जा रहा था तब तूफान आने पर उसने इसे झिड़कने के द्वारा शांत नहीं किया था (देखें प्रेरित. 27:14-44)। उसने ऐसा इसलिये नहीं किया क्योंकि वह ऐसा नहीं कर सकता था। इस पर भी ध्यान दें कि जहाज़ पर बैठे प्रत्येक व्यक्ति पर परमेश्वर की करुणा थी, क्योंकि जहाज़ के टूटने पर भी उसमें के सभी 276 लोग बच गए थे (देखें प्रेरित. 27:24, 34, 44)। मैं तो यह विचार करना पसन्द करूंगा कि परमेश्वर की करुणा उन पर इसलिये थी क्योंकि पौलुस ने उन पर परमेश्वर की करुणा होने के लिए प्रार्थना की थी।